बालकोंसे चौखट पर निकले हुए अक्षरोंको धीरे धीरे पढ़नेके लिये तथा जहां दो चार शब्द इकठ्ठे मिले उन्हें लिखनेके लिये शेष चार विद्यार्थियोंसे कहा। दो चार बार इसी प्रकार कल घुमाई गई हर एक चक्करमें शब्दावलीका स्थान बदलता जाता था।

लड़के छ: घण्टे रोज इस तरह परिश्रम करते थे। अध्यापकने कई बड़ी बड़ी पोथियां दिखलाईं जो भग्न वाक्योंका संग्रह थीं। उनको पूरा करके विज्ञान और शिल्पका एक पूरा भण्डार बनाने की उसकी इच्छा थी। अगर सब कोई चन्दा करके ऐसे ऐसे पांचसौ यन्त्र लगाडोमें स्थापित करदें तो बहुत कुछ उन्नति हो सकती है।

फिर मैं भाषा विद्यालयमें गया। वहां तीन जन बैठे स्वदेश भाषाको उन्नत करनेका परामर्श कर रहे थे। पहला प्रस्ताव यह था कि अनेकाक्षर शब्दके बदले एकाक्षर शब्दका प्रयोग तथा क्रिया को निकाल कर भाषाको संक्षेप करना। वस्तुत: संसारमें जो कुछ विचारा जा सकता है सो सब संज्ञाके सिवा और कुछ नहीं है।

दूसरा प्रस्ताव था शब्द मात्रको दूर करनेका। इससे स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और भाषा भी अत्यन्त संक्षेप हो जायगी। यह साफ प्रगट है कि जितने शब्द हम बोलते हैं उनसे हमारे फेफड़े को आघात पहुंचता है। बस इसीसे आयु भी क्षीण होती जातीहै। जब सब वस्तुओंकी संज्ञाही शब्द है तो सब कोई उन वस्तुओंही को अपने अपने साथ क्यों न लिये फिरें जिनके बारेमें बात चीत करना हो। अगर स्त्रियां गंवार और मूर्खोंके साथ मिल कर विद्रोह का भय न दिखातीं तो अब तक यह रीति चल गई होती और प्रजाको भी लाभ पहुंचता। जो हो, बहुतसे पण्डित और ज्ञानी इस नई रीतिसे चलते हैं अर्थात् बोलनेके बदले चीजोंहीसे काम निकालते हैं। लेकिन इसमें एक बड़ी भारी कठिनाई है। वह यह कि किसीके बहुत तरहकी बातें करनी हुई तो उसे अपनी पीठ पर सब चीजोंका गट्ठर लादना पड़ेगा या दो मजदूर करने पड़ेंगे। मैंने इनमेंसे दो अध्यापकोंको फेरीवालोंकी तरह बोझसे

लड़ते हुए अकसर देखा था। अगर कहीं रास्तेमें दोनोंकी आपसमें भेंट होगई तो गठरिया खोल कर घण्टों बात चीत करते पर मुंह दोनोंहीके बन्द रहते थे। बातें पूरी होजाने पर अपने अपने सामनको बोरोंमें रख कर चलते बनते थे। दोनों दोनोंको मदद गठरियां उठानेमें करते थे।

मामूली बातचीतके लिये हरएक आदमी जेबमें और बगलमें चीजें मजेमें लेजा सकता है। और घरमें तो कोई वस्तु कम होना ही न चाहिये। बैठकमें भी इस कृत्रिम सम्भाषणके निमित्त समस्त वस्तुएं प्रस्तुत रहना अवश्यक है।

इस तरहके सम्भाषणमें सबसे बड़ा लाभ तो यह होगा कि सब देशवाले जो एकही तरहकी वस्तु व्यवहार करते हैं इस भाषाको समझेंगे और फिर यह जगत्‌भाषा हो जायगी। बस राजदूतगण सहजमें विदेशी राजा या मन्त्रियोंकी बोलियां समझने लग जायंगे।

गणित पढ़ानेकी परिपाटी ऐसी विलक्षण देखी कि युरोपवाले उसका अनुभव भी नहीं कर सकते हैं। गणित सम्बन्धी प्रतिज्ञा और प्रमाणादि पतली रोटी पर लिख कर बालकोंको भूखे पेटमें खिलाये जाते हैं और फिर तीन दिन तक रोटी और पानीके सिवा और कुछ खानेको नहीं दिया जाता है। रोटीके परिपाक होजाने पर उसका प्रभाव मस्तिष्क पर पहुंच जाता है। यही उन लोगों की धारणा है। परन्तु अभी तक यह अच्छे बौंड़े नहीं उतरा है इसके भी कारण हैं। एक तो स्याही गड़बड़ बनती है दूसरे लड़के परहेजसे रहते नहीं।

षष्ठ परिच्छेद।

विद्यालयका राजनीति-विभाग देख कर मैं सन्तुष्ट नहीं हुआ। वहांके प्रस्तावित विषय प्राय: दुराशा सूचक तथा नितान्त असम्भव थे। मेरी समझमें वहांके पढ़ानेवाले बिलकुल पागल थे। वहांकी दशा याद कर अब भी अफसोस होताहै। वह अभागी यही प्रस्ताव

करते थे कि राजा महाराजगण पण्डित, योग्य और धार्म्मिक लोगों होको अपना कृपापात्र बनाना पसन्द करें—मन्त्रीगण सबकी भलाईका विचार करें—योग्य, गुणी और उत्तम कार्य्य करने वालोंको पुरस्कार मिला करे—राजकुमारोंको ऐसी शिक्षादी जाय जिसमें वह अपने तथा प्रजाके स्वार्थको समझें—राज्यके लिये वही लोग चुने जायं जो इन रीतियोंको वरतें इत्यादि बहुतसी बातें थीं जो कभी किसीने सोची भी न होंगी। इन बातोंका पूरा होना मुझे असम्भवही दीखता है।

परन्तु जो हो इतना मैं अवश्य कहूँगा कि सब प्रस्तावही ऐसे न थे। एक बड़ा बुद्धिमान डाकरथा जो राजनीतिके तत्वको अच्छी तरह समझता था। उसने सब प्रकारके रोग और कलङ्कको अव्यर्थ महोषधि ढूंढ़नेमें जो राजाके दोष और कर्म्मचारियोंकी लम्पटता से प्राय: होते हैं, अच्छा परिश्रम किया था। यह कहा जाता है कि सभासमितिवाले बहुधा चित्तकी तीव्रता तथा उत्तेजनादिसे प्राय: दु:खित रहते हैं। उनके सिरकी विशेष कर हृदयकी बीमारियां होती हैं। तिल्ली, घुमटा मूर्च्छादि रोगोंसे वह पीड़ित होते हैं। गलगण्ड तीक्ष्ण तथा मन्दक्षुधा प्रभृति नाना प्रकारके रोग उन्हें घेरे रहते हैं जिनके नाम अनन्त हैं। इसलिये डाकर साहब की राय है कि अधिवेशनके पहले तीन दिन कुछ डाक्टर हाजिर रहा करें जो सभा भङ्ग होनेके समय प्रत्येक सभासदकी नाड़ी देखें। फिर चौथे दिन औषधिकी व्यवस्था करें।

यह भी लोकापवाद है कि राजाके प्रिय मन्त्रियोंके भूलनेकी बीमारी होती है। डाक्टर साहबकी राय थी कि प्रधान मन्त्रीका चिकित्सक बहुत संक्षेप और स्पष्ट रूपसे कामकाजके विषयमें जो कुछ कहना हो सो उनसे कहे और चलनेके समय उनकी नाक मलदे या पेट पर एक घूसा जमावे या घट्टाको कुचलदे या दोनों कानोंको खेंचे या सूई चुभोदे या बांहमें जोरसे चुटकियां काटे



नं० ११
पेटपर एकलात जमावे।
पृष्ठ १५४

जिसमें फिर वह भूल न जायं। दरबारके दिनोंमें जब तक काम पूरा न होजाय रोज मन्त्रीको इसी तरह चिताना चाहिये।

अगर सभाहीमें लोग लड़ पड़ें तो उनके मेल मिलाप करा देने का बहुत अच्छा यत्न डाक्टर बतलाता था। वह कहता था कि दोनों दलोंमेंसे सौ सौ मुखियोंको चुन कर दो दोका ऐसा जोड़ा लगावे कि जिनके सिर आकारमें प्रायः समान हों। इन जोड़ोंको एक पांतमें बिठादे। दो अच्छे जर्राह ठीक एकही साथ एक जोड़े के सिरका पिछला हिस्सा ऐसे ढङ्गसे काटलें कि दोनोंके मस्तिष्क आधे आधे होजायं। फिर एकका मस्तिष्क दूसरेके सिरमें लगादें। बस आपसमें मेल हो जायगा। मगर यह काम जरा कठिन है। पर वह कहता था कि तनक होशियारी करनेहीसे रोगी चंगे हो जायंगे क्योंकि जब दो तरहके मस्तिष्क एकही माथेमें आजायंगे तो बहुत जल्दी विवाद मिट जायगा।

प्रजागणसे बिना कष्ट दिये रुपया पैसे वसूल करना चाहिये इस विषय पर दो अध्यापकोंको परस्पर खूब विवाद करते मैंने सुना है। पहला कहता था कि पापियोंको मूर्खोंसे करलेना उत्तम है। पाप और मूर्खताका अन्दाज उसके पड़ोसीके द्वारा मिला करेगा। दूसरा इसके उलटा कहता था। जो जिस गुण करके विख्यात हो उसके उसी गुण पर टैक्स लगना चाहिये। गुणके अनुसारही टैक्स न्यूनाधिक होगा। किसको कितना टैक्स लगना चाहिये सो वह लोग आपही इसका निबटेरा करलेंगे। सबसे अधिक टैक्स तो उन पर लगना चाहिये जिन पर स्त्रियोंकी विशेष कृपा रहती है अर्थात् जो उनके प्रेमिक हैं। जिसका जैसा प्रेम होगा वह टैक्स भी वैसाही देगा। रसिकता, साहस और सभ्यता परभी इसी नियम से ऊंचा कर लगाना चाहिये। लेकिन आदर, मान, न्याय, विद्वत्ता तथा बुद्धिमानी पर एक बारही कर न लगना चाहिये क्योंकि वह ऐसे गुण हैं जिनका अन्दाजा न पड़ोसी कर सकते हैं और न कोई आपही कर सकता है।

स्त्रियां सुन्दरता और कपड़े पहननेकी सुघड़ाई पर टेक्स दें। पुरुषोंकी तरह यह सब भी अपने अपने सौन्दर्य्य और वेशविन्यास का विचार करेंगी। परन्तु दृढ़ता, सतीत्व, सुबोध और सुन्दर स्वभाव पर टेक्स नहीं लगना चाहिये क्योंकि इसमें ज्यादे खर्चा बैठेगा।

और एक सज्जनने एक कागज दिखाया जिसमें राजा महाराज के विरुद्ध जो कुछ षड़यन्त्र या विद्रोह होते हों उनके प्रगट करने के उपदेश सब लिखे थे। वह कहता था कि जितने बड़े बड़े राज नीतिज्ञ लोग हैं वह जिन पर सन्देह हो उनके भोजनकी, भोजनके समयकी, किस करवट सोते हैं, किस हाथसे आबदस्त लेते हैं इत्यादि बातोंकी परीक्षा किया करें। उनकी विष्ठाकी भली भांति जांच करें तथा उसकी रङ्गत, गन्ध, स्वाद गाढ़ेपन आदिकी देख भाल रक्खें। तजरबेसे देखा गयाहै कि मनुष्य पखानेमें जैसा गम्भीर अभिनिविष्ट और तत्पर होता है वैसा और कभी नहीं होता। ऐसी अवस्थामें उसने स्वयं परीक्षा करके देखाथा कि राजाको मारनेका विचार करनेसे विष्टाका रङ्ग हरा होजाता है। लेकिन जब विद्रोहकी अथवा राजधानीको भस्मकर देनेकी इच्छा मनमें होती है तो उसका कुछ औरही रङ्ग हो जाता है।

बिलकुल बातें विशदरूपसे लिखी हुई थीं। कई बातें राजनीतिज्ञोंके लिये अद्भुत तथा लाभकी भी थीं। लेकिन मेरी समझ से विषय अपूर्ण था। मैंने साहस करके कह दिया कि अगर आप चाहें तो मैं भी कुछ नये उपाय बता सकता हूं। उसने सादर मेरे प्रस्तावको स्वीकार किया और जो कुछ मैंने बताया सो ग्रहण किया। बहुत कम ग्रन्थकार दूसरेकी बताई बातें मानते हैं।

मैंने कहा—"त्रिबनियाके राज्यमें जिसे वहांवाले 'लण्डन' कहते हैं मैं कुछ दिन रह आया हूं। वहांके अधिकांश निवासी षड्यन्त्रको प्रकाश करनेवाले, शपथ खानेवाले, अभियोग चलाने वाले, जासूसी करनेवाले तथा गवाही देनेवाले इत्यादि हैं। यह लोग अपने साथ नाना प्रकारके यन्त्रादि रखते हैं और राज्यसे वेतन

पाते हैं षड्यन्त्रादि वहां उन्हींकी करतूत है जो अपने राजनीति-ज्ञानका डङ्का बजाया चाहते—दुर्बल राजप्रणालीको पुनः शक्ति प्रदान किया चाहते—साधारण असन्तोषको मिटना चाहते—हराम के मालसे अपना बटुआ भरा चाहते और अपने स्वार्थके लिये सर्वसाधारणके मतका खण्डन मण्डन करना चाहते हैं। जो लोग जासूस हैं सो पहलेही निश्चय कर लेतेहैं कि किन किन मनुष्योंको विद्रोहादिको शङ्कामें पकड़ना चाहिये। जिन पर शङ्का होती है उनकी चिट्ठी पत्रियां रोक कर वह सब कैद कर लिये जाते हैं। फिर वह चिट्ठी पत्रियां उन चित्रकारोंके पास जो गूढ़ार्थ वाक्य शब्द और अक्षरोंके रहस्य भेदमें बड़े निपुण होते हैं भेज दी जाती हैं। इनके वाक्य और अर्थ दोनोंही विचित्र होते हैं। नमूना यह है—एक झुण्ड राजहंसोंके माने है मन्त्री सभा। लङ्गड़ा कुत्ता = चढ़ाई करनेवाला। सेना = महामारी, बाज पक्षी = प्रधान मन्त्री। वात व्याधि = प्रधान पुरोहित। दार (फांसीकी लकड़ी) = स्टेट सेक्रेटरी। झाड़ू = विप्लव। चलनी = बेगम। चूहा पकड़नेकी कल = नौकरी। हगरा खड्डा = खजाना। नहँमा = कचहरी। टोपी और घण्टियां = राजाके मुँहलगी। टूटा नल = अदालत। खाली पीपा = सेनापति। बहता घाव = शासन इत्यादि इत्यादि।" इस उपायसे जब काम नहीं चलता तो वह और और दूसरे उपाय अवलम्बन करते थे जिनके लिखनेकी यहां कुछ आवश्यकता नहीं है।

आपने मेरी बातें सुन कर प्रसन्नता प्रगटकी और अपनी पोथीमें धन्यवाद सहित मेरा नाम उल्लेख करनेका बचन दिया।

अब और कोई वस्तु यहां देखनेकी वास्ते शेष न रही। इस लिये मैं भी इङ्गलैण्ड लौटनेका बांधनू बांधने लगा।

सप्तम परिच्छेद।

यह महादेश जिसका यह राज्य एक भाग है मैं समझता हूं, अमेरिकाके उस अप्रकट प्रान्तके पूर्व, कालीफोर्नियाके पश्चिम और

प्रशान्त महासागरके उत्तर विस्तृत है जो लगाडोसे डेढ़सौ मीलसे अधिक दूर नहींहै। वहां मलडो नाडो नामका एक सुन्दर बन्दरहै। लगनग द्वीपके रहनेवाले यहां आकर तिजारत करतेहैं। यह जापानसे पूरब तीनसौ मील पर बसा हुआ है। जापानके महाराज और लगनगके राजामें खूब मेल मिलापहै इसीसे दोनों टापुओंमें जहाजों की आवा जाई अकसर बनी रहती है। मैंने इसी राहसे युरोप पहुंचनेका मनसूबा किया। मैंने दो खच्चर भाड़े किये तथा एक बेगार राह बताने और माल टाल ढोनेके लिये। सुनोडोसे मैं बिदा हुआ। चलनेके समय उसने खूब दिया लिया था।

रास्तेमें कोई घटना लिखनेके योग्य नहीं हुई। खुशी राजी मलडो नाडो पहुंचा। यहां लगनग जानेके लिये कोई जहाज तैयार न था और न जल्दी जानेकी सम्भावनाही थी। लाचार वहां टिकना पड़ा। बाजार छोटा मोटा अच्छा था। एक आदमी से जान पहचान होगई। उसने बड़ी खातिर की। वह बड़ा भला मानस था। उसने कहा कि लगनगके लिये जहाज एक महीनेसे कममें नहीं छूटेगा। तब तक चलिये पासहीके गलवडव ड्रिब नामक छोटेसे टापूकी सैर कर आवें। मैं भी राजी होगया। एक छोटीसी ष्टीमर किराये कीगई। उस पर सवार होकर हम लोग चलते हुए।

गलवडव ड्रिब शब्दका अर्थ है जादूगरोंका द्वीप। यह छोटासा मजेका टापू है। यहांकी जमीन उपजाऊ है। यहां एक तरह की जाति निवास करती है जो सबके सब जादूगर हैं। राजा भी इसी जातिका है। यह आपसहीमें व्याह करते हैं। जो सबमें बड़ा होता है वही राजगद्दी पर बैठता है। राजाका मकान सुन्दर और बगीचा मनोहर था। चारों ओर पत्थरकी बीस फुट ऊंची दीवार थी। भीतर गोशाला, गोदाम आदि अलग अलग बनी हुई थीं।

राजाके नौकर चाकर जो थे सो सब विचित्रही थे। राजा

जादूके बलसे चाहे जिस मुर्देको बुलाता और पके चौबीस घण्टे उससे काम लेता। इससे ज्यादे नहीं ले सकता और न फिर उसी मुर्देको बिना भारी जरूरतके तीन महीनेके अन्दर बुला सकता था।

जब हम लोग वहां पहुंचे तो दिनके ग्यारह बजे थे। मेरे साथियोंमें से एकने जाकर मेरे आनेकी खबर राजाको दी। आज्ञा पाकर मैं भी भीतर गया। दोनों ओर सिपाही खड़े थे जिनकी पोशाक और सजावट अनोखी थी। उनके चेहरे देख कर मैं इतना डर गया था कि लिख नहीं सकता। वह सभी भूत थे। दालान वगैरहको लांघ कर दीवानखासमें जापहुंचा। मेरे साथ दो आदमी और थे—एक तो मित्र और एक मित्रका सहचर। राजा सिंहासन पर बैठा था। तीन तीन बार हम लोगोंने सलाम किया। कई प्रश्नके बाद राजाने बैठनेकी आज्ञा दी। सिंहासनकी निचली सीढ़ीके पास तीन तिपाइयां रखी थीं उन्हीं पर हम तीनों बैठ गये। यद्यपि बलनी बरबीको भाषा वहांकी भाषासे बिलकुल जुदी थी। तथापि राजा उसे समझता था। उसने उसी भाषामें मेरे सफरका हाल पूछा और उंगलीके इशारेसे अपने आदमियोंको हट जानेके लिये कहा। वह सब इशारा पातेही ऐसे चम्पत होगये जैसे आंखें खुलने पर सपना होजाता है। इस ओवदेवाओंको देख कर मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। मैं हक्का बक्का सा हो इधर उधर देखने लगा। तब राजाने धीरज बंधाया और कहा कि डरो मत तुमको कोई कुछ न कहेगा। साथी मेरे ज्योंके त्यों बैठे थे। उन्हें डरते वरते कुछ न देखा। वह सदैवही भूतोंका दर्शन करते होंगे!

आखिर मैंने भी ढाढ़स बांधा और हिम्मत करके टूटे फूटे शब्दोंमें सफरका मुख्तसर हाल कह सुनाया। कहते समय मैं इधर उधर देखता भी जाता था कि फिर कहीं कोई भूत तो न आगया। फिर भोजनकी ठहरी। राजा साहबने हम लोगोंके सङ्ग खायाथा। वहां भी सब कामोंमें भूत प्रेतही हाजिर थे। पहलेकी अपेक्षा अब मेरा भय भी कुछ दूर होगयाथा। सूर्यास्त तक वहीं रहे। रात

को महलमें रहनेके लिये कहा गया पर हम लोग न रहे। इसके लिये क्षमा प्रार्थना करनी पड़ी थी। हम लोग राजमहलके बाहर एक घरमें सोये और सवेरे उठ कर फिर राजाके पास गये।

इस प्रकार वहां हम लोग दस दिन रहे। दिनको महलमें और रातको बाहर रहते थे। फिर तो मैं भूतोंसे ऐसा ढीठ होगया कि क्या लिखूं। सब डर भय जाता रहा। अगर कुछ रह भी गया होगा तो उसे कौतूहलने दबा दिया था। राजाने मुझसे कहा—"कहो जिस भूतको बुलादें। सृष्टिकी आदिसे आज तक जितने मनुष्य मरे हैं सब आसकते हैं। तुम जो चाहो सो पूछ सकते हो पर एक बात याद रक्खो कि जो जिस समय जीवित था उससे उसी समयकी बातें पूछना आगे पीछेकी नहीं क्योंकि वह लोग कभी झूठ नहीं बोलते सदा सच बोलते हैं।" मैंने सब स्वीकार किया। हम लोग जिस कमरेमें थे वहांसे बगीचा साफ दिखाई पड़ता था। सबसे पहले मैंने "अगर बेला" की लड़ाईके बाद बड़े सिकन्दरको ससैन्य देखना चाहा। बस राजाके उंगली हिलातेही खिड़कीके नीचे एक बड़े लम्बे चौड़े मैदानमें सब प्रत्यक्ष होगया। सिकन्दर भीतर बुलाया गया। बड़ी मुश्किलसे उसकी ग्रीक भाषा समझमें आई थी। उसने कसम खाके कहा—"मुझे विष नहीं दिया गया। बहुत शराब पी जानेके कारण ज्वरसे मैं मरा था।"

फिर आल्पस पर्व्वत लांघते हुए हनीबलको देखा। उसने कहा कि अंगूरी शराबकी एक बून्द भी मेरे कम्पमें न थी।

सीजर और पोम्पी ससैन्य दिखलाई पड़े जो लड़नेको तैयार थे। सीजरको अपनी पिछली बड़ी जीतके कारण जुलूसमें सज धजके निकलते देखा। फिर रोमको सिनेट सभाको एक बड़े हालमें और आजकलके प्रतिनिधियोंको दूसरेमें अवलोकन किया। पहलेमें मालूम होताथा कि वीर और देवता विराजित हैं और दूसरेमें ठग, जेबकतरे डाकू, फेरीवाले, हरसुट्टक और हुड़दङ्गे भरे हुए हैं।

राजाने मेरे कहनेसे सीजर और ब्रूटसको बुलाया। ब्रूटसको

देख कर चित्तमें भक्तिका सञ्चार होआया। उसके चेहरेसे वीरता, पूर्ण धर्म्म प्रियता, दृढ़ प्रतिज्ञता, निर्भीकता, सच्ची देशहितैषिता, उदारता टपकी पड़ती थीं। सीजर और ब्रूटसमें खूब मेल मिलाप देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। सीजरने मेरे सामने स्वयं मुक्तकण्ठसे स्वीकार किया था—"मेरे जीवनके बड़े बड़े कार्य्य भी अधिक अंशमें मेरे मारे जानेके तुल्य गौरव युक्त नहीं हैं।" ब्रूटससे मेरी बहुत बात चीत हुई। वह कहता था—"मेरे पुरखे जूनियस, सुकरात, एपामिराउस, कनिष्टकेटो, सरटोमस मोर और मैं सदा एक सङ्ग रहते हैं इनके जोड़का सातवां न कोई हुआ न होगा।"

और कितने महात्माओंका दर्शन मैंने किया सो सविस्तर लिख कर पाठकोंको कष्ट देना नहीं चाहता। सारांश यह कि सब युगों की सब बातें आखोंके सामने आगई थीं। मैं विशेष कर उन्हीं लोगोंको देख कर सन्तुष्ट हुआ जो दुष्टों और पराये राज्यके छीनने वालोंका दमन कर पीड़ित दुःखित जातियोंको स्वाधीनता प्रदान कर गये हैं। इन सब व्यापारोंको अवलोकन कर मैं कितना प्रसन्न हुआ सो लिख कर बतलाना असम्भवही है।

अष्टम परिच्छेद।

प्राचीनकालके प्रसिद्ध प्रसिद्ध कवि और विद्वानोंके दर्शनकी उत्कट अभिलाषा हुई। एक दिन विशेष कर इन्हीं लोगोंके निमित्त नियत हुआ। होमर और अरिष्टोटल अपने टीकाकारों सहित पधारे। टीकाकारोंकी इतनी भीड़ हुई कि सारी जगह भर गई। एक मेलासा लग गया था। मैंने देखतेही दोनोंको पहचान लिया था। होमर अरिष्टोटलसे लम्बा और सुन्दर था। इतना बुड्ढा होने पर भी खूब अंकड़कर सीधा चलता था। उसके नेत्र खूब तीक्ष्ण थे। अरिष्टोटल बहुत झुक गया था और हाथमें लाठी लिये था। उसका मुंह दुबला, बाल पतले और छोटे तथा आवाज धीमी थी। बहुत जल्द मुझे मालूम होगया कि उन्हें किसीने पहचाना नहीं। पह-

चानना तो दूर रहा कोई उनकी नाम भी न जानता था। एक भूत ने जिसका नाम मालूम नहीं चुपकेसे मेरे कानमें कहा कि यह टीकाकार लोग प्रेतलोकमें कवियोंके पास मारे लज्जाके कभी फटकते भी नहीं क्योंकि इन सबने अशुद्ध टीका लिख लिखकर सबको बहकाया है। मैंने डिडीमस और युष्टाथियस दो टीकाकारोंको होमरके सामने पेश किया तो आपने उनकी योग्यतासे बढ़ कर आदर किया और कहा कि कवियोंके कर्म्मको समझनेके लिये बुद्धिकी आवश्यकता है। स्कोटस और रेमसके आने पर जब मैंने उनका वृत्तान्त कह सुनाया तो अरिष्टोटसका धीरज जाता रहा। उसने छूटतेही उनसे पूछा—क्या बाकी लोग भी तुम्हारे ऐसे मूर्ख हैं।

पांच दिन तक मैं प्राचीन विद्वानोंसे सम्भाषण करता रहा। रोमके पहले बादशाहोंमेंसे बहुतोंको देखा। एक विख्यात रसोइयेको बुलाया जो सब सामग्री प्रस्तुत न रहनेके कारण अपनी पाक चातुरी न दिखा सका।

मेरे दोनों साथी किसी जरूरी कामके सबब ज्यादे ठहरना नहीं चाहते थे। लाचार मुझे तीनही दिनमें सबको देखना पड़ा। दो चारसौ बरसके अन्दर युरोप या विलायतमें जो अच्छे अच्छे नामवर होगये हैं उनके दर्शनकी अभिलाषा हुई। मैं पुराने घराने के नामी पुरुषोंका बड़ा भक्त हूं इसीलिये मैंने दो चार दर्जन राजाओंको तथा उनके आठ दस पुरुषोंको क्रमसे बुलवाया। पर पीछे मुझे बड़ा अफसोस हुआ क्योंकि राजकुलमें राजपुरुषोंके बदले सफरदे, ओहदे, इटलीके पादरी, हज्जाम वगैरह ही नजर आये। मैं और भी कुछ पतेकी कहता पर राजाओंको आदरकी दृष्टिसे देखता हूँ इससे कुछ कह नहीं सकता। जब इनकी यह दशा है तो राव, उमराव और बाबू लोगोंके बारेमें कहाही क्या जाय? किसी किसी वंशके लोगोंकी एक आकृति विशेष होती है। जिससे वह पहचाने जाते हैं। यह बात किस कुलमें कबसे चली सो पता लगा कर मुझे कुछ कम आनन्द नहीं हुआ था। क्यों

किसी कुलमें लम्बी ठुड्डियां, क्यों दो पीढ़ियों तक दुष्ट, दो तक बेवकूफ और ठग आदि होने लगे सो मुझे अच्छी तरह मालूम होगया। कैसे कोई कोई खानदान निष्ठुरता, असत्यता और भीरुता के लिये विख्यात होगया और किसने पहले दुष्ट रोगका बीजा-रोपण अपने कुलमें किया इत्यादि बातोंका भी पता मुझे लग-गया। सारांश यह कि एक भी विशुद्ध वंश दृष्टिगोचर न हुआ।

आधुनिक इतिहासोंसे मैं बहुत घबरा गया। क्योंकि सौवर्ष पहलेके राजघरानेके नामवर पुरुषोंकी अच्छी तरह खोज करनेसे भली भांति प्रगट होगया कि बेईमान लेखकोंने दुनियाको कैसा धोखा देरखा है। अब लोग नितान्त डरपोंक भीरुको युद्ध क्रियामें पटु मूर्खोंको चतुर, खुशामदियोंको सच्चा, नास्तिकोंको धर्म्मात्मा, व्यभिचारियोंको सदाचारी और जासूसोंको सत्यवादी समझने लगे हैं। जजोंके घूसखोर होने और आपसकी ईर्षाद्वेषसे कितनेही बिचारे निरपराध और सज्जनोंको देशनिकाला तथा फांसी हुई कितनेही दुष्ट अत्याचारियोंको ऊंचे ऊंचे पद मिले और कितनेही प्रेटार्थी, कुटने, भाड़ और रण्डियोंकी खूब चली बनी। और भी बहुतसी बातोंका गुप्त भेद सुन कर मनुष्य जाति की विद्या बुद्धि पर घृणा होने लगी थी।

जो लोग गुप्त इतिहास लिखनेका दावा करते हैं उनकी भी कलई खुल गई। न जाने इन लोगोंने कितने राजोंको विष दे कर कब्रमें भेजा है—एकान्तमें राजा मन्त्रियोंकी जो सलाह हुई है उसे भी आपने प्रकट किया है। बड़े बड़े राजदूत और प्रधान सचिवोंके चित्तमें कब कौन भाव उठते थे उन्हें भी आप अपनी दैवी शक्तिसे जान गये हैं। पर वास्तवमें आप जानते कुछ भी नहीं सब मनकी कल्पना मात्र है! जितनी आश्चर्य्यमयी बड़ी बड़ी घट-नाएं हुई हैं सबकी कारण मुझे मालूम होगये। सर्वत्र कुटने कुट-नियोंहीकी तूतियां बोलतीथीं। एक सेनापतिने मेरे सामने स्वीकार किया कि उसने केवल भीरुता और दुराचरणसे जय पाई थी।

जल सेनापतिने कहा—"एक तो मैं युद्ध करना नहीं जानता दूसरे शत्रुसे भी मिल गया था तो भी मेरीही जीत हुई।" तीन राजोंने भी कहा—"हम लोगोंने भी कभी किसी गुणीको ऊंचे पद पर नियत नहीं किया। भूलसे या मन्त्रियोंके विश्वासघातसे जिनका हम सदैव विश्वास करते थे भलेही कोई होगया हो तो हम कह नहीं सकते। अगर हम लोग फिर जी उठें तो ऐसा कभी न करें।" इसके सिवा अच्छी अच्छी युक्तियां दिखलाकर वह यह भी बोले कि अत्याचारके बिना राजसिंहासन ठहर भी नहीं सकता है क्योंकि स्थिरता दृढ़ता, एकाग्रतादि गुण सर्वसाधारणके कार्य्यके बाधक हैं।

किस प्रकारसे बहुतेरे मनुष्य बड़ी बड़ी उपाधियां तथा ऐश्वर्य्य पाजाते हैं सो जाननेके लिये मुझे अत्यन्त लालसा हुई। राजासे कहने पर उपाधि तथा ऐश्वर्य्य पाये हुये आधुनिक समयके अनेक भूत बुलाये गये। इन लोगोंने अपने अपने धन वा मान पानेके जो कुछ कारण बताये सो सुन कर बड़ी ग्लानि हुई। झूठ बोलना झूठी गङ्गाजली उठाना, जुआचोरी तथा कुटनापन करना आदि पापकर्म्महीसे प्रायः लोग बड़े हुए थे। सबने स्वीकार किया कि कोई स्त्री और कन्याके व्यभिचारसे—कोई स्वदेश वा राजाकी बुराई करनेसे—कोई विष प्रयोगसे और बहुतेरे अन्यायसे निरपराधोंको विनष्ट करके धनवान हुए थे। हम गरीबोंको सदा बड़े आदमियोंका अदब करना चाहिये परन्तु इन विचित्र बातोंके मारे चुप न रह सका। पाठक क्षमा करेंगे।

मैं इतिहासोंमें अकसर पढ़ता था कि बहुतोंने राजा और राज्य दोनोंहीकी बड़ी बड़ी सेवाएंकी हैं। इन सेवा करनेवालोंको मैंने देखना चाहा। पीछे खोज करनेसे मालूम हुआ कि उनके नाम इतिहासोंमें नहीं हैं और जो दो चार हैं भी सो नराधम, दुष्ट और राजद्रोही बनाये गये हैं। और शेषकी कहीं चर्चा भी सुननेमें न आई। सब नीची नजर किये बुरी दशामें मेरे पास आये थे। यह भी प्रगट हुआ कि किसीने अन्न कष्टसे और किसीने आत्मग्लानिसे प्राण दिये थे और शेष सूली पर चढ़ाये गये।

एक प्रेतात्माकी कहानी सुन कर बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसके साथ अठारह वर्षका एक बालक भी था। वह रोमनगरके एक जङ्गी जहाजका कप्तान था। उसने एक जल युद्धमें जय प्राप्त कर शत्रुके तीन जहाजोंको समुद्रमें डुबो दिया और एक छीन लिया। एएटनीके भागनेका यही सबब था। कप्तानकी जीत हुई सही पर उसका एकलौता पुत्र युद्धहीमें काम आया। वही पुत्र उसके साथ था। रोम आकर उसने एक दूसरे बड़े जहाजकी कप्तानीके लिये जिसका कप्तान लड़ाईमें मारा गयाथा, सम्राट अगष्टससे प्रार्थना की। परन्तु अगष्टसने वह पद एक छोकरेको देदिया जिसने समुद्र कभी देखा न था। और वह उसकी बेगमकी एक दाईका लड़का था। बिचारा कप्तान निराश होकर अपने जहाज पर लौट आया पर नमाजको गये गले पड़े रोजाकी बात हुई। कप्तान असावधानीके दोषमें पदच्युत हुआ और कप्तानके सहकारीका एक दामन बरदार उस ओहदे पर बहाल किया गया। कप्तान बिचारा रोमनगर छोड़ कर बहुत दूर एक गांवमें किसानोंके साथ रहने लगा। वहीं उसकी मृत्यु हुई। मुझे इस कहानीका विश्वास नहीं हुआ तो एग्रीपाको जो उस जहाजका सेनापति था बुलाया उसने आकर सब वृत्तान्तको सत्य बताया। केवल यही नहीं कप्तानने आत्म प्रशंसा के भयसे जो सब बातें छिपा रखी थीं, उन्हें भी उसने प्रकाश कर दिया।

विलासिताके प्रभावसे इतनी जल्दी इतना अत्याचार उस साम्राज्य में बढ़ गया तो जहां सब तरहके पाप बहुत दिनसे चले आते हैं और जहां प्रधान सेनापतिही जिसे किसी वस्तु पर बहुत अल्प स्वत्व है सारी बड़ाई और लूटके धनका अधिकारी बन बैठता है वहां ऐसी ऐसी घटनाएं देख कर ताज्जुब नहीं करना चाहिये।

जितने भूत आये थे सबने अपनी अपनी करनी कह सुनाई। इसी एकसौ वर्षके बीचमें लोग इतने मध्यम होगये सो देख कर मुझे बड़ा दुःख हुआ। दुष्ट उपदंशने अंग्रेजोंके चेहरोंको कैसा

बिगाड़ दिया, आकार कैसा छोटा कर दिया और कहां तक कहैं सब तरहसे कमजोर करके कैसा कुरूप कर दिया है।

इन सबके बाद मैंने इङ्गलैण्डके पुराने ढङ्गके किसानोंका दर्शन किया जो एक समय सादा भोजन, सादी पोशाक और सादी चाल चलनके लिये, अपने व्यवहारमें सचाईके लिये, सच्ची स्वतन्त्रता साहस और देशानुरागके लिये विख्यात थे। तबके और अबके लोगों को देख कर कलेजा कांप गया। इन महात्माओंकी सन्तान रुपये के लोभमें पड़कर कैसी अधःपतित होगई है! पारलियामेण्टके चुनावके समय वोट (Vote) बेच बेच कर इन सबने राज दरबार के पापोंको खूब बटोरा है। हा हन्त!

नवम परिच्छेद।

लवडवड्रिवके राजासे बिदा होकर हम लोग मालडोनाडा पहुंचे। वहां पन्द्रह दिन ठहरनेके बाद एक जहाज मिला जो लग नग जाता था। मैं उसी पर सवार हुआ। दोनों सज्जनोंने मेरा बड़ा आदर सत्कार किया यहां तक कि रास्तेके लिये कलेवा भी मेरे साथ बांध दिया था। बिचारे जहाज तक मुझे पहुँचा भी गयेथे। इस सफरमें एक महीना लगा। रास्तेमें एक बार तूफान भी आया था। खैर जहाज ग्लमेगनिगके बन्दरमें पहुंचा। यह लगनगसे दक्खिन पूरब बसा हुआ है।

जब मैं उतरा तो किसी खलासीने दुष्टतासे अथवा भूलसे मेरी खबर कष्टम हाउसवालोंको करदी। फिर क्या था मेरी लङ्गाझारी लीगई। मैंने अपनेको हालैण्डवासी बताया क्योंकि मुझे जापान तक जाना था और वहां डचके सिवा दूसरे युरोपियन घुसने नहीं पाते थे। मैंने कष्टम हाउसके अफसरसे कहा कि मेरा जहाज बलनीबरबीके किनारे तबाह होगया। मैं किसी तरह लपूटा (उड़न टापू) जापहुंचा। अब मैं जापान जाया चाहता हूं। वहांसे अपने देशको चला जाऊंगा। इस पर उसने जवाब दिया—"बिना

सरकारी हुक्म पाये मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। अभी तुम्हारे आनेकी खबर सरकारमें भेजता हूं। पन्द्रह दिनमें वहांसे जवाब आजायगा तब तुम्हारी छुट्टी होजायगी।" लीजिये मैं बिना अपराध कैदी होगया। मैं एक सुन्दर मकानमें पहुंचाया गया। मेरे खाने पीनेका भी सब प्रबन्ध सरकारकी तरफसे कर दिया गया। द्वार पर पहरेके लिये एक सन्तरी भी बैठाया गया। मेरे आनेकी चर्चा तमाम फैल गई। दूर देशका आदमी समझ कर सभी लोग मुझे देखने के वास्ते आते थे।

एक छोकरा मेरे साथही जहाज पर आया था। वह लगनग और मालडो नाडा दोनों जगहोंकी बोलियां जानता था। मैंने उसे अपना द्विभाषी नियत किया। उससे वहांकी भाषा भी सीखता था।

जिस दिन आनेकी आशा थी उसी दिन दूत उत्तर लेकर राजधानीसे वापिस आया। वह सम्वाद लाया कि राजाने मुझे और मेरे साथियोंको बुलाया है। लाचार मुझे भी वहां तक जाना पड़ा। साथियोंमें केवल वही द्विभाषी छोकरा था। मांगने पर सवारीके लिये दो खच्चर मिले थे। साथमें दस सवार भी थे। जब आधे दिनकी राह बाकी रही तब एक दूत खबर करनेको आगे दौड़ा। पीछे हम लोग भी जापहुंचे। राजधानीका नाम ड्रालड्रागडुभ या ट्रिलड्रोगड्रिब है। जहां तक मुझे याद है इसका उच्चारण दोनों प्रकारसे होता है। दो दिन विश्राम करनेके बाद मैं राजदरबारमें दाखिल हुआ। यहांके सलामका अजब ढङ्ग है। जो कोई राजासे मिलने जाता है उसे थोड़ी दूर तक जमीन चाटना तथा पेटके बल चलना पड़ता है। मुझे भी यह करना पड़ा था। मैं विदेशी था इसलिये गच खूब साफ कर दीगई थी जिसमें गर्दसे कुछ हानि न हो। जो हो यह इज्जत सबके नसीबमें नहीं होती है। जो बड़े बड़े दरजेके लोग हैं उन्हींको रेंगना तथा जमीन चाटना पड़ता है। अगर कोई जबरदस्त दुश्मन मिलनेको

आता है तो जान बूझ कर सारी गच धूलसे भरदी जाती है। मैंने एक सज्जनको जमीन चाटते चाटते बेदम हो जाते देखा है। यहां तक कि जब वह रेंग कर खड़ा हुआ तो मुँहसे आवाज नहीं निकल सकती थी। इसकी कोई दवा भी नहीं क्योंकि जो लोग राजासे मुलाकात करने जाते हैं उनके लिये राजाके सामने थूकना या मुँह पोछना बड़ा भारी कसूर है। इसकी सजा केवल फांसी है। एक रीति और है जो मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। जब राजा की इच्छा किसी दरबारीको जान साधारण तौरसे लेनेकी होती है तो सारे महल पर एक तरहकी विषैली बुकनी फैलादी जाती है। बस चाटनेवाला चौबीस घण्टेके अन्दरही यमपुर पहुँच जाता है। लेकिन यह बातहै कि राजाको अपनी प्रजाकी जान बहुत प्यारीहै और इस विषयमें वह बहुत सावधान भी रहते हैं। हमारे युरोप के राजे महाराजे भी ऐसेही हों यही मेरी वाञ्छा है! इसी लिये जब किसीकी जान बुकनीके द्वारा लीजाती है तो श्रीमान् गचको खूब साफ करके धो डालनेकी कड़ी आज्ञा देते हैं। अगर नौकर चाकर इसमें असावधानी करते तो राजा साहब बहुत नाराज होते हैं। मेरे सामनेकी बात है कि एक छोकरेकी गलतीसे एक होन हार नवयुवककी जान चली गई। उस छोकरेने जान बूझ कर डाहसे विषकी बुकनीको साफ नहीं किया था। इस अपराधके लिये उसे कोड़े लगनेवाले थे पर राजाने कृपा करके उसे छोड़ दिया और कहा—"मेरी आज्ञाके बिना फिर ऐसा मत करना।"

अच्छा अब आगे सुनिये। रेंगते रेंगते सिंहासनसे चार गजके फासले पर पहुँचा तो धीरेसे घुटना टेक मैं खड़ा हुआ। फिर सात बार जमीनसे माथा टकरा कर उस भाषाका एक वाक्य मुझे कहना पड़ा। यह पहलेहीसे मुझे रटाया गया था। इसका मतलब यह है—श्रीमान् सूर्य्य और साढ़े ग्यारह चन्द्रमाओंसे भी अधिक जीवें।" इसका आपने क्या जवाब दिया सो मेरी समझमें न आया। तौभी मुझे जो कुछ रटाया गया था सो मैंने कह दिया। वह

यह है—"मेरी जिह्वा मेरे मित्रके मुंहमें है।" अर्थात् मैं अपने दुभाषियेको बुलानेकी आज्ञा चाहता हूं। फिर दुभाषिया आया। एक घण्टेसे ज्यादे बात चीत होती रही। राजाने जो कुछ पूछा उसका जवाब दुभाषियेके द्वारा बराबर मैं देता जाता था। मैं तो वलनीवरवी भाषामें बोलता था और वह लगनगकी भाषामें उसका तर्जमा करता जाता था।

राजा मेरी मुलाकातसे बहुत प्रसन्न हुए। आपने अपने कर्म्मचारीको मेरे डेरे डण्डे तथा भोजन आदिके प्रबन्धके लिये आज्ञा दी उसने सब ठीक ठाक कर दिया।

राजाके अनुरोधसे मैं वहां तीन महीने रह गया। आप मुझ पर बहुत क्षपा रखते थे। आप मुझे एक अच्छा पद भी राजसभा में देते थे पर मैंने अङ्गीकार नहीं किया क्योंकि बुढ़ापेमें बालबच्चों के साथही रहना उचित जांन पड़ा।

दशम परिच्छेद।

लगनगके रहनेवाले सुशील और उदार हैं। पूर्व देशके लोगों को जो एक तरहका अभिमान होता है उसका यद्यपि एक छींटा इन लोगों पर भी पड़ा है तथापि यह विदेशियोंके साथ शिष्टाचार करतेहैं विशेषत: जिनका राजसभामें आदर होता है उनका अधिक सम्मान करते हैं। वहां कई बड़े बड़े आदमियोंसे मेरी जान पहचान होगई। मेरा दुभाषिया हरदम साथ रहताथा इससे बात चीत में कोई अन्तर नहीं पड़ता था।

एक दिन मजेका जमघट था। एक मित्रने मुझसे पूछा—"हमारे किसी अमरको आपने देखाहै?" मैं बोला—नहीं। लेकिन यह तो बताइये कि मतलब क्या है। यह सारी सृष्टिही मरनहार है फिर आपके इस अमरका क्या अर्थहै?" वह बोला अच्छा सुनिये। यहां संयोगसे कभी कभी किसीके यहां एकाध बालक ऐसा उत्पन्न हो होजाता है जिसके माथेमें बाईं भौंहके ठीक ऊपर एक गोल लाल

दाग रहता है। लोग कहते हैं कि जिसके यह चिन्ह होता है वह कभी मरता नहीं।" उसके कहनेसे यह भी मालूम हुआ कि यह दाग पहले चवन्नीसे कुछ छोटा रहता है लेकिन पीछे बढ़ जाता है और रङ्ग भी बदल जाता है। बारह वर्षके बाद यह हरा हो जाता है और पचीस तक वैसाही रहता है। बाद घोर नीला फिर पैंतालिसवें सालमें खूब काला होता है और आकार भी बढ़ कर अठन्नीसे कुछ छोटा बन जाता है। फिर कोई परिवर्त्तन नहीं होता। ऐसे लड़के बहुत कम पैदा होते हैं। सारे राज्यके अमर लड़के लड़की मिलाकर अधिकसे अधिक ग्यारह सौ होंगे। राजधानीमें कुल पचासही हैं। और शेषमें एक बालिका तीन साल की है। अमर किसी एकही खानदानमें पैदा नहीं होता। संयोग से सर्वत्रही होता है। इन अमरोंकी सन्तान भी अमर नहीं होती। सब लोगोंकी तरह वह भी मरती है।

यह वृत्तान्त सुन कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। जिसने यह बात कही थी वह बलनीबरबी भाषा समझताथा और मैं वह भाषा खूब सप्पाटेसे बोल सकता था सो मारे आनन्दके मेरे जीमें जो कुछ आया सो बक गया। मैं झोंकमें बोल उठा—अहा! वह जाति धन्य है जिसमें लड़कोंको अमरत्व प्राप्त करनेका भी सौभाग्य है! वह मनुष्य धन्य हैं जो प्राचीन कालके गुणोंकी जीवन्त मूर्त्ति दर्शन करते हैं और जिन्हें प्राचीनकालकी विद्या पढ़ानेको गुरु तय्यार हैं! परन्तु सबसे बढ़ कर धन्य वह अमरगण हैं जो मानव जातिको विश्वव्यापक विपदसे बचे हुए हैं और जिनके चित्तमें मृत्युका कुछ भी भय नहीं है। परन्तु आश्चर्य है कि राजसभामें एक भी अमर दृष्टि गोचर नहीं हुआ! काला दाग ऐसा चिन्ह है जो कभी छिप नहीं सकता। महाराजसे न्यायी राजा अपने दरबारमें ऐसे चतुर सुयोग्य मन्त्रियोंको न रक्खें यह भी विचित्रही है! कदाचित अमरगणही राजसभासे दूर भागते हों क्योंकि यह सब पापोंकी खान है। अथवा नवयुवक लोगही अपनी तीक्ष्ण बुद्धिके सामने

बड़ोंकी सुन्दर सम्मतियोंको तुच्छ समझते हों! प्रायः देखा भी गया है कि यह लोग अपनी बातके बड़े पक्षी होते हैं इसीसे अमरों को अपने समाजमें घुसने नहीं देते! अस्तु, जब महाराज तक मेरी घुस पैठ है तो अवश्य उन्हें उचित परामर्श दूंगा। दुभाषियेके द्वारा उन्हें समझाऊंगा कि अमरगणको अपना मन्त्री बनाइये। वह मेरी सम्मति मानें चाहे न मानें मैं अब यहां अवश्य रहूंगा। महाराज यहां रखनेके लिये आग्रह करतेही हैं और अच्छा पद देने की कहही चुकेहैं तो अब जरूर रहूंगा और यदि अमरगण स्वीकार करें तो उन्हींके सङ्ग अपना जीवन शेष करूंगा।"

वह मनुष्य जिससे मैंने यह सब कहा था बलनीबरबी भाषा जानता था यह मैं पहलेही लिख चुका हूं। वह मेरी बातें सुन कर हंसा। फिर अपनी मण्डलीवालोंको मेरे व्याख्यानका सारांश सुनाया। इस पर उनमें खूब गहरी बात चीत हुई जिसका एक अक्षर भी मैं समझ न सका और न भाव भङ्गीहीसे कुछ समझमें आया कि मेरी बातोंका कैसा प्रभाव उन पर पड़ा। थोड़ी देर चुप रहकर उसी व्यक्तिने जो बात करता था कहा—"आपकी बातें सुन कर हम लोग बहुत प्रसन्न हुए। अच्छा यह तो बताइये कि अगर आपही अमर होते तो किस प्रकार जीवन व्यतीत करते!"

मैंने जवाब दिया—"ऐसे सुन्दर विषयपर व्याख्यान देना विशेष कर मेरे लिये सहज है। मैं सदैव सोचा करता हूं कि अगर राजा होता तो यह करता, सेनापति होता तो यह करता और लाट होता तो यह करता। और इस अमर होनेके बारेमें तो सब सोचे बैठा हूं कि कैसे रहूंगा और क्या क्या करूंगा।

"अगर परमात्माकी दयासे मैं अमर होता और ज्योंहीं जीवन मृत्युका अन्तर मुझे मालूम होजाता त्योंही सबसे पहले चाहे जैसे होता धन बटोरनेकी चेष्टा करता। कम खर्च और सुन्दर बन्दोबस्तसे बहुत जल्द धनवान होजाता। बस कोई दो सौ वर्षमें कुबेर का भण्डार मेरे पास आजाता। लड़कईसे शिल्प और विज्ञना

पढ़नेमें मन लगाता बस विद्यामें भी साचात् वृहस्पति बन जाता। फिर जो कुछ बड़े बड़े कार्य्य या घटनाएं होतीं सो सावधानीसे लिखता और निष्पच्च भावसे प्रत्येक राजा और मन्त्रीके कार्य्योंकी आलोचना करता तथा अपनी टिप्पणियां उसके साथ जोड़ देता। रीति, व्यवहार, भाषा, वेष, भोजन और खेलोंके अदल बदलको भी लिख कर दिखलाता। इस प्रकार मैं विद्या बुद्धिका जीवित खजाना होता और अपनी जातिका तो एक पूज्य देवता होजाता।

"साठ वर्षके बाद मैं कदापि व्याह न करता। खर्च कमती करता तो भी अतिथि सेवासे मुंह न मोड़ता। होनहार युवकोंको धर्म्मके लाभ तथा तत्व बताता। लेकिन मैं नये पुराने अमरोंमें से बारह चुन कर उन्हींके साथ रहता। जिनको रुपयेकी दरकार होती उन्हें रुपये और जिनको स्थान न होता उन्हें अपने गृहमें स्थान देता। किसी किसीको अपने साथ भी खिलाता। और तुममें से बहुत कमको सो भी दोचार पण्डितोंहीको अपने साथ बिठाता और जब वह मर जाते तो बिना दुःख किये उनके पुत्रोंको ग्रहण करता। जिस तरह वाटिकामें सालके साल फूल फूलते हैं और गिरते हैं पर उसका किसीको कुछ ख्याल भी नहीं होता। उसी प्रकार मैं भी अपने नश्वर साथियोंके लिये कुछ दुःख न करता।

"यह अमरगण और मैं अपने अपने विचारोंको आपसमें प्रगट करते—किस तरह भ्रष्टाचार जगतमें घुस आया इसकी आलोचना करते और सब किसीको डरा धमका समझा बुझाकर इस पापाचार को बन्द करनेकी चेष्टा करते। हमारे आदर्शका अनुकरण करने से मनुष्य जातिके स्वभावकी वह नीचता जिसकी निन्दा सब युगों से होती आई है दूर होजाती।

"राज्यों और सलतनतोंके न्यारे न्यारे उलट फेर तथा इह लोक और परलोकके परिवर्त्तनको देखता। पुराने नगरोंको उजड़ते, छोटे छोटे देहातोंको राजधानी बनते, बड़ी बड़ी मशहूर नदियों को सूख कर सोते बनते, समुद्रको एक किनारा सुखाते और दूसरा

डबोते, सभ्य देशोंमें असभ्यता फैलते और असभ्योंको सभ्य बनते अपनी आंखोंसे देखता और देख कर प्रसन्न होता। न जाने और कितनी नई चीजें देखता।

"धूमकेतुके उदय अस्तको तथा सूर्य्य, चन्द्र और तारोंकी गतियोंके परिवर्त्तनको अवलोकन कर ज्योतिष विद्यामें बड़ी बड़ी अद्भुत वस्तुओंका आविष्कार करता।"

और भी बहुतसी बातें मैंने कही थीं। जब मैं अपनी वक्तृता पूरी कर चुका तब उसी सज्जनने पुन: मेरे कथनका सार भाग सबको कह सुनाया। उन लोगोंने अपनी भाषामें बहुत देर तक न जाने क्या क्या बातें कीं जो मेरी समझमें न आईं। लोग मेरी ओर देख देख कर हंसते जरूर थे। उसने फिर यों कहना शुरू किया—आप भूलते हैं। आपने इस विषयको भली भांति समझा नहीं। अमर केवल यहीं पैदा होतेहैं और कहीं नहीं होते। जापान या बलनीबरबी राज्यके रहनेवालोंको अमरका विश्वास नहीं है। वह लोग इन बातोंको झूठ समझते हैं मैं दोनों राज्योंमें कुछ कुछ दिन रह कर वहांके पण्डितोंसे बात चीत कर चुका हूँ। सब कोई अधिक दिन जीना चाहता है। मरना कोई पसन्द नहीं करता। जिनका एक पैर कब्रमें लटक चुका है वह भी दूसरेको बाहर खींचनेके लिये पूरी कोशिश करते हैं। अत्यन्त बूढ़ा भी एक दिन और जीनेकी इच्छा करता है। मरना सब कोई बुरा समझता है। मृत्युसे भागना सबका स्वाभाविक है। केवल हम लोग लगनगके रहनेवाले जीनेकी कुछ परवा नहीं करते क्योंकि हम लोग बराबर अमरोंको देखा करते हैं। इससे हम लोगोंको अधिक दिन जीनेकी इच्छा नहीं होती है।

"आपने जो कुछ कहा सो ठीक नहींहै और न युक्ति सङ्गतही है। सदा हट्टा कट्टा और जवान बना रहना कौन पसन्द नहीं करता? यह प्रश्न न था कि सब सुखोंके साथ कोई सदा जवान बना रहना चाहता है या नहीं। बल्कि यह था कि बुढ़ापेके सब दुःखोंको झेलते हुए कोई सब दिन कैसे जी सकेगा। इन दुःखोंके साथ अमर

होना शायद कोईही पसन्द करे। लेकिन जापान और बलनीवरबी वाले अधिक दिन जीना चाहते हैं। बिना दुःख और क्लेश पाये कोई मरना नहीं चाहता है। आपही कहिये आप तो बहुत जगह घूम आये हैं। यह बात क्या झूठ है?"

इस भूमिकाके बाद वह अमरोंके बारेमें यों कहने लगा—"अमर लोग तीस बरस तक हमारी तरह सब काम करते हैं पीछे मन्दे पड़ने लगते हैं। अस्सी वर्ष तक यही हालत रहती है। यहांके साधारण लोगोंकी परमायु अस्सी वर्षकी है। अमरगण जब अस्सी वर्षके होते हैं तो वह साधारण बुढ़ोंकी अपेक्षा अधिक सुस्त और बलहीन होजाते हैं। सदा जीना पड़ेगा इसी भयसे उनकी सुध बुध चली जाती है। हठ, चिड़चिड़ाहट, लालच, गुस्सा, पाखण्ड और बहुत बोलना बढ़ जाता है। प्रीति निबाहना, मोह ममता सब छूट जाती है। पोते पोतियोंके सिवा दूसरोंका प्यार करना भूल जाता है। ईर्षा, द्वेष और बुरी वासना बढ़ जाती है युवकों को विलास करते तथा वृद्धोंको मरते देख कर उन्हें ईर्षा होती है। जवानीकी बातें याद कर बहुत मलाल उनके जीमें होता है। किसी को मरते देख कर वह बहुत रोते और कहते हैं हाय यह पुण्यधाम को विश्राम करने चले और हम यहां दुःख भोगनेको पड़े हैं! कब हमरा उद्धार होगा! हाय हम काहेको कभी उस लोकमें जायंगे, इत्यादि। उनकी स्मरण शक्ति कम हो जाती है। जो कुछ लड़कपनमें पढ़ते हैं सो सब भूल जाते हैं। उनके आगे जो जो घटनाएं हो चुकी हैं वह सब भी उन्हें याद नहीं रहतीं इसलिये उनसे किसी घटना या विषयका पक्का भेद नहीं मिल सकता है। कहां तक कहें अमरोंको दुसह दुःख सहना पड़ता है। उनके कष्टका ठिकाना नहीं। लेकिन जो अमर बुढ़ापेमें निरे बच्चेकी तरह हो जातेहैं और जिनकी स्मरणशक्ति एकदम लुप्त होजातीहै उनको कुछ कम कष्ट होता है। उन पर सब कोई दया भी करता है। क्योंकि औरोंमें जो दोष होते हैं सो इनमें नहीं होते।

"अगर किसी अमर पुरुषका व्याह अमर स्त्रीसे होगया तो राज्यके नियमसे दो में से किसीकी उमर अस्सी सालकी होने पर वह सम्बन्ध तोड़ दिया जाता है। क्योंकि नियम बनानेवालोंने विचारा है कि जो लोग बिना अपराधके यहां मर्त्यलोकमें सदा वास करनेका दण्ड पाचुके हैं उनके ऊपर बुढ़ापेमें स्त्रियोंके भरण पोषणका भार डालना उनके दण्डको दूना करना है।

"अस्सी वर्षके उपरान्त अमर लोग नियमानुसार मृतवत् समझे जाते हैं और उनके पुत्र सब सम्पत्तियोंके अधिकारी होजाते हैं। उनके खाने पीनेके लिये कुछ अंश अलग निकाल दिया जाता है। और गरीबोंको अनाथालयसे खानेको मिलता है। फिर अमरोंको किसी प्रकारका भारी काम नहीं मिलता और न उनका कोई विश्वास करता है। वह जमीन जायदाद न खरीद सकते और न बेच सकते हैं। दिवानी या फौजदारीके मुकद्दमेमें गवाही भी नहीं दे सकते हैं।

"नव्वे वर्षमें उनके दांत गिर पड़ते, और बाल उड़ जाते हैं। फिर उनको किसी प्रकारका स्वाद नहीं मिलता। भूख प्यास बन्द होजाती है। जो कुछ मिलता है उसे खा लेते हैं लेकिन किसी वस्तु पर रुचि नहीं होती। जो सब रोग पहले हो चुकते हैं वह न घटते हैं न बढ़ते हैं ज्योंके त्यों बने रहते हैं। स्मरण शक्ति एक दम चौपट होजाती है। चीज वस्तुकी कौन पूछे अपने बाल बच्चोंके नाम तक भूल जाते हैं। इसी हेतु वह पोथियां भी नहीं पढ़ सकते हैं।

"यहांकी भाषा भी सदा बदला करती है। एक शताब्दीका अमर दूसरी शताब्दीकी भाषा नहीं समझता है। दोसौ वर्षके बाद अमर लोग अपने पड़ोसीसे भी बात चीत नहीं कर सकते। स्वदेश में रह कर भी वह सब विदेशीकी तरह होजाते हैं।"

जहां तक मुझे याद है अमरोंकी यही एक कहानी मैंने सुनी थी। मैंने नये पुराने पांच छः अमरोंके दर्शन भी किये थे। सबसे नया अमर दोसौ वर्षसे अधिकका न था। कई मित्रोंके कहने पर

भी कि मैं बड़ा भारी भ्रमणकारी हूं, सारे जगत्‌की छान आया हूँ, अमरोंने मुझसे कुछ न पूछा और न कान फट फटाए। इतना जरूर कहा—"कुछ निशानी देते जाइये।" अर्थात् कुछ भिक्षा दीजिये। वहां भीख मांगना आईनके विरुद्ध है। इन सबको अनाथालयसे भोजन मिलता है पर उससे पेट नहीं भरता इसीलिये बेचारे अमर लोग आईनके भयसे इस घुमावसे भीख मांगते हैं।

सब आदमी अमरोंसे घृणा करते हैं। अमरका उत्पन्न होना लोग अमङ्गल समझते हैं। जब कोई अमर पैदा होता है तो उसका सब विवरण रजिष्टरमें लिख लिया जाता है। उसी रजिष्टरसे अमरोंकी उमरका पता लगता है। हजार वर्षसे अधिकका रजिष्टर रक्खा नहीं जाता पुराना होनेसे सड़ गल जाता है। या विद्रोहादि होनेसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाता है। अमरोंकी उमरका पता लगानेका मामूली कायदा यह है। उनसे पूछा जाता है कि किस राजा या बड़े आदमीका नाम तुम्हें याद है। नाम बताने पर इतिहास देखनेसे उमर मालूम हो जाती है। अस्सी वर्षके हो चुकने पर जिस राजाका राज्य आरम्भ होता है उसका नाम अमर लोग नहीं बता सकते हैं।

अमरोंके चेहरे बड़े भयङ्कर होते हैं। मैंने ऐसे भयानक चेहरे कभी नहीं देखे। औरतोंकी तो कुछ मत पूछो उनकी सूरतें और भी डरावनी होजाती हैं। अवस्थाके सङ्ग सङ्ग आकृति भी बदलती जाती है। जिसकी जितनी अवस्था अधिक होगी उसकी आकृति भी उतनीही भयङ्कर होगी। छः अमरोंको देखतेही मैंने पहचान लिया था कि इनमें सबसे बड़ा कौन है। यद्यपि एक या दो सौ सालसे अधिकका उनमें कोई न था।

पाठकगण! अब निश्चय जानलें कि जो कुछ मैंने देखा सुना उससे अमर होनेकी इच्छा एम दक जाती रही। अपने कहे पर मैं खूब पछताया और लज्जित हुआ। इस जीनेसे मरनाही मैंने अच्छा समझा। राजा भी मेरी इन सब बातोंको पीछे सुन कर

खूब हंसा और बोला—"अपने देशवालोंको मृत्युसे ढीठ करनेके लिये एक जोड़ा अमर लेजाइये न।" यह आईनके विरुद्ध था नहीं तो चाहे जो खर्च होता मैं जरूर एक जोड़ा अमर विलायत भेज देता पर क्या करता लाचारी थी।

जो हो अमर लोगोंके बारेमें जो सब नियम थे सो खूब सोच समझके बनाये गये थे। मैं उन्हें पसन्द करता हूं। दूसरे देशवाले भी ऐसे ऐसे मौके पर ऐसाही करते हैं। यदि यह नियम न होते तो अमर लोग बुढ़ापेमें तृष्णाके मारे सारी जातिके कर्त्ता धर्त्ता तथा राज पाटके भी अधिकारी बन बैठते क्योंकि बुढ़ापेमें तृष्णा अधिक बढ़ जाती है। पर पीछे अयोग्यताके कारण सारे देशको बण्टा ढार कर देते।

एकादश परिच्छेद।

मैं समझता हूं अमरोंके वृत्तान्तसे पाठकोंका मनोरञ्जन हुआ होगा क्योंकि यह मामूली ढङ्गसे कुछ निरालाहै। अबतक यात्राकी जितनी पोथियां हाथ लगीं किसीमें ऐसी बात पढ़ी है सो याद नहीं पड़ती। अगर मैं भूलता हूं तो कहना यह है कि अगर एकही देशका वर्णन कई यात्री करते हैं तो वह प्राय: एकसा मालूम होता है। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि पिछले यात्रीने पहले की चोरीकी है।

लगनग और जापानवालोंमें खूब तिजारत होती है। सम्भव है जापानी लेखकोंने अपनी पोथियोंमें अमरोंका कुछ वृत्तान्त लिखा हो। एक तो मैं जापानी भाषा नहीं जानता दूसरे मैं वहां बहुत कम ठहरा इससे इस बातको कुछ छानबीन न कर सका। लेकिन आशा है कि डच लोग जरूर इसको टोह लगावेंगे।

लगनग नरेशने वहां रहनेके लिये बहुत आग्रह किया पर मैं राजी नहीं हुआ क्योंकि मन बालबच्चों पर लगा हुआ था। पीछे राजाने भी अपनी अनुमति दी और जापानेश्वरके नामकी चिट्ठी मुहर करके मेरे हवालेकी। चारसौ चव्वालीस बड़ी बड़ी अशर्फियां

तथा एक लाल हीरा बिदाईमें दिया। विलायत आकर वह हीरा ग्यारहसौ पौण्डमें बेचा था।

ता० ६ मई सन् १७०८ ईस्वीको मैं राजा तथा अन्यान्य मित्रों से बिदा हुआ। राजाने हिफाजतके लिये अपने सिपाहियोंको साथ कर दिया था जो समुद्र तक पहुंचा गये। छः दिनके बाद जहाज मिला। उसी पर मैं सवार हुआ। पन्द्रहवें दिन जापान पहुंचा। कष्टम हाउसवालोंको महाराजके नामकी चिट्ठी दिखाई। यह लोग लगनग नरेशकी मुहरको खूब अच्छी तरह पहचानते थे। यह मुहर हथेली जैसी चौड़ी थी और उसमें एक राजाकी तसवीर खुदी हुई थी जो एक लंगड़े भिखारीको जमीनसे उठा रहा था। चिट्ठी देख कर वहांके मजिष्ट्रेटने मेरी बड़ी खातिरकी। तुरत गाड़ी भाड़ा करके अपने आदमियोंके साथ मुझे येडो भेज दिया। मुझे गाड़ीका भाड़ा भी न देना पड़ा। जापानकी राजधानीका नाम येडो है। वहां पहुंच कर महाराजको चिट्ठी दी। बड़े ठाठसे चिट्ठी खोली और पढ़ी गई। फिर दुभाषियेके द्वारा मैंने अपनी रामकहानी सुनाई और कहा कि अब यहांसे अपने देश जाया चाहता हूं। महाराजसे मैंने यह भी निवेदन किया कि मैं भाग्य के फेरसे यहां आपड़ा हूं कुछ सौदागरी करने नहीं आया इसलिये जैसे और युरोपीय लोगोंसे क्रूसविद्ध ईसामसीहकी मूर्त्ति कुचलवाई जाती है मुझसे न कुचलवाई जाय। मैं श्रीमान्‌का बड़ा उपकार मानूंगा। इतना सुन कर महाराजको मेरे डच होने पर सन्देह हुआ क्योंकि मैंने अपनेको डचही बताया था। इसका कारण आगे लिख आया हूं। महाराज बोले—"आश्चर्य्य है कि आज तुम यह बात कहते हो! अब तक तुम्हारे देशके किसीने यह बात नहीं कही थी। पहले पहल तुम्हारेही मुंहसे यह बात सुननेमें आई है। सच मुच तुम्हारे हौलेण्डर होनेमें मुझे सन्देह है। तुम जरूर क्रिस्तान हो। खैर, तुम मेरे मित्रको चिट्ठी लाये हो इससे तुम्हें क्षमा करता हूं। पर इसमें एक चालाकी करनी पड़ेगी नहीं तो

तुम्हारी जान नहीं बच सकती। अगर हौलेण्डर लोग सुन पावेंगे तो जरूर तुम्हें मार डालेंगे। इसलिये तुम चुपचाप चले जाओ। मेरे आदमी तुमसे कुछ न कहेंगे मानो वह भूल गये हैं।" मैंने इस क्षपाके लिये महाराजको अनेक धन्यवाद दिया। उस समय कुछ सेना नङ्गासकको जानेवाली थी महाराजने सेनापतिको समझा बुझाके प्रतिमा कुचलनेकी बात गुप्त रखनेको कह दिया। मैं सेना के साथ जापानसे रवाना हुआ।

ता० ९ वीं जून १७०९ ईस्वीको मैं नङ्गासक पहुंचा। रास्तेमें बड़ी तकलीफ हुई। वहां तुरत अम्बोयना नामक एक जहाज मिल गया। वह हालेण्डकी राजधानी अमष्टरडामको जाताथा। इस पर मल्लाह सब हालेण्डरही थे। मैं हालेण्ड-केलिडन शहरमें पहले बहुत दिन रह चुका हूं। वहां मैं पढ़ता था इससे वहांकी बोली मैं अच्छी तरह बोल सकता था। कहांसे मैं आता हूं सो सो जहाजियोंको मालूम होगया। अब वह सब मेरा हाल अह-वाल पूछने लगे। मैंने बहुतही मुख्तसरमें अपना हाल कह सुनाया पर बहुतसी बातें छिपा रखी थीं। अपनेको मैंने हालेण्डवासीही बताया था। हालेण्डके बहुतसे आदमियोंके नाम मैं जानता था। इससे मा बापके नाम भी गढ़ लिये। कहा वह ग्वेलडरलैण्डके इलाकेमें रहते थे उन्हें कोई नहीं जानता है। कप्तान जो भाड़ा मांगता सोई मैं देता पर वह जान गया कि मैं डाक्टर हूं इससे उसने मुझसे आधाही भाड़ा लिया पर शर्त यह हुई कि रास्तेमें मैं डाक्टरी करता चलूं। जहाज पर चढ़नेके पहले कई जहाजी मुझसे आकर लगे पूछने कि आपने ईसामसीहकी प्रतिमाको कुचला या नहीं। हां सब तरहसे महाराजका मन भर दिया, कह कर मैं उनकी बातोंको उड़ाने लगा पर तिजारती जहाजके एक दुष्ट मल्लाहने मेरी तरफ इशारा करके एक अफसरसे कह दिया कि इसने प्रतिमाको नहीं कुचला है। इस पर उस सेनापतिने जो मुझे जहाज पर चढ़ाने आया था उस दुष्टको खूबही पीटा। फिर मुझसे किसीने कुछ नहीं पूछा।

रास्तेमें लिखनेके लायक कोई बात नहीं हुई। उत्तमाशा अन्तरीप तक जहाज मजेमें चला आया। वायु बराबर अनुकूल मिलती गई। वहां केवल स्वच्छ जल लेनेके वास्ते जहाज ठहर गया था। १० वीं अप्रैल १७१० ईस्वीको हम लोग कुशल पूर्वक अमष्टरडाम पहुंच गये। सिर्फ तीन आदमी बीमार होकर मरगये और एक समुद्रमें गिर पड़ा था। अमष्टरडामसे बहुत जल्द एक छोटे जहाज पर मैं इङ्गलेण्डको रवाना हुआ।

१६ वीं अप्रैलको डाउन्स पहुंचा। दूसरे दिन जहाजसे उतरा पूरे पांच वर्ष छः महीनेके बाद पुनः जन्मभूमिका दर्शन प्राप्त हुआ। मैं सीधे रेडरिफकी तरफ चल पड़ा। उसी दिन दो बजे घर जा पहुंचा। घरमें सबको राजी खुशी पाया। बड़ा आनन्द हुआ।

इति तृतीय भाग समाप्त।

विचित्र-विचरण।

चतुर्थ भाग।

हिनहिन देशकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

मैं लड़के बालोंके साथ लग भग पांच महीने घरमें रहा। अगर मुझे सुखका ज्ञान होता तो मैं जरूर कहता कि यह मेरे पांच महीने अत्यन्त सुखसे कटे। इतनेमें—"एडवेनचर" नामक एक बड़े तिजारती जहाजकी कप्तानी मुझे मिल गई। फिर किससे घरमें रहा जाता ? प्यारीका पांव भारी था पर मैंने इसकी भी कुछ परवा न की। घर बार छोड़ मैं चटपट निकल खड़ा हुआ। डाक्टरीसे जी ऊब गया था इसीसे अबके कप्तानी स्वीकारकी इस। कामको मैं अच्छी तरह जानता था और यह नौकरी भी अच्छी थी। डाक्टरीके काम पर एक नवयुवक रक्खा गया। ता: ७ वीं सितम्बर १७१० ईस्वीको पोर्टस्माउथसे हम लोगोंने कूच किया। १४ वीं को ब्रिष्टल जहाजके कप्तान पोकोपसे टेनेरिफमें भेंट हुई जो वक्कम काटनेके लिये कम्पीचीकी खाड़ीको जारहा था। १६ वीं को एक तूफानने हम दोनोंको अलग कर दिया। लौटने पर मुझे मालूम हुआ कि उसका जहाज डूब गया और एक छोकड़ेके सिवा और कोई न बचा। वह विचारा कप्तान बड़ा सच्चा और अपने फनका पूरा उस्ताद मगर जरा जिद्दी था। इसी जिद्दने उसे चौपट किया। मेरा कहना मान लेता तो वह भी मेरी तरह लौट कर अपने लड़के बालोंसे मिलता।

मेरे साथके कई आदमी ज्वरके प्रकोपसे पञ्चत्वको प्राप्त हुए। आदमीके बिना काम चलना कठिन था अतएव उन व्यापारियोंकी आज्ञासे जिन्होंने मुझे बहाल किया था वारबेडोज और लीवार्ड द्वीपोंमें जहाज रोककर कुछ नये आदमी भर्ती किये। पर पीछे इसके लिये मुझे पछताना पड़ा क्योंकि उनमें प्रायः डाकूही थे। हम लोग जहाज पर पचास आदमी थे। मैंने प्रशान्त महासागर में अमेरिकावालोंसे वाणिज्य करने तथा जो कुछ बन जाय सो आविष्कार करनेका मनसूबा बांधा था। इन दुष्टोंने जो नये भर्ती हुए थे मेरे साथियोंको मिला लिया और मुझे गिरफ्तार करके जहाजको दखल करनेका विचार किया। षड़यन्त्र करके एक दिन सवेरे ये लोग मेरे कमरेमें घुस आये और मेरी मुश्कें बांध कर बोले—"अगर जरा भी हिलेगा तो समुद्रमें डबो देंगे। खबरदार जो मुंह खोला।" मैंने शपथ करके कहा—"मैं कुछ न करूंगा जो तुम कहोगे वही करूंगा। मैं तुम्हारा कैदी हूं।" इतना सुन कर उन्होंने मुश्कें खोलदीं। केवल एक पैर जञ्जीरसे बांध दिया। पहरे पर एक सन्तरी बैठा। अगर मैं बन्धन खोलनेकी जरा भी कोशिश करता तो वह जरूर गोली मार देता क्योंकि उसे यही हुक्म था। मेरे खाने पीनेके लिये वहीं पहुँच जाता था। वह लोग जहाजके कर्त्ता धर्त्ता बन बैठे। उन लोगोंका इरादा स्पेनके जहाजों को लूटनेका था पर यह काम बहुत आदमियोंके बिना हो नहीं सकता था। इसलिये उन्होंने जहाजके मालको पहले बेचनेका फिर मेडिगास्कर जाकर कुछ डाकू बटोरनेका पक्का विचार किया। मेरे कैद होजानेके बाद भी जहाजके कई आदमी मरे थे। कई हफ्ते तक जहाज चलता रहा। अमेरिकावालोंसे उन लोगोंने व्यापार भी किया। मैं अपने कमरेमें बन्द था। जहाज किधरसे कहां जाता था सो मुझे कुछ खबर न थी। मैं बराबर मृत्युके ध्यान में निमग्न था।

९ वीं मई १७११ ई० को जेम्सवेल्श मेरे पास आया और

बोला—"कप्तानने तुमको किनारे पर छोड़ देनेके लिये हुक्म दिया है।" मैंने उससे बहुत कहा सुना पर सब व्यर्थ हुआ। जहाजका कप्तान कौन था सो भी उसने नहीं बताया। जबरदस्ती सबने मुझे एक किश्ती पर बिठा दिया। अच्छीसे अच्छी पोशाक मुझे पहर लेने दी जो बिलकुल नई थी। कटारके सिवा और कोई हथियार मेरे साथ न छोड़ा। इतनी कृपा और कीथी कि मेरी लङ्गाझोरी नहीं ली। इसीसे पाकिटमें कुछ रुपये और कुछ जरूरी चीजें रह गई थीं। करीब तीन मील दूर लेजाकर मुझे किनारे पर छोड़ दिया। मैंने पूछा कि इस देशका क्या नाम है पर किसी ने कुछ न बताया। कहा—"कप्तानके हुक्मसे हम लोग यहां छोड़ देते हैं और कुछ नहीं जानते। जल्दी भागो नहीं तो ज्वार आती है।" इतना कह वह सबके सब चलते बने।

मैं कातर होकर आगे बढ़ने लगा। जाते जाते तीर पर जा पहुंचा। वहां सुस्तानेके लिये बैठ गया और अब क्या करना चाहिये सो सोचने लगा। थोड़ी देरके बाद फिर उठ कर चला। जहाजी लोग जब सफर करते हैं तो कड़े, कांचकी अंगूठियां खिलौने वगैरा साथमें ले लेते हैं। मैंने भी कुछ लेलिये थे। जो कोई जङ्गली असभ्य मिलेगा उसे यह सब देकर अपने जीवनकी रक्षा करूंगा। यही सब सोचता विचारता मैं आगे बढ़ा जाता था। वृक्षोंकी लम्बी पङ्क्तियोंसे सारी भूमि बंटी हुई थी। यह किसीके लगाये न थे, स्वभावतः उत्पन्न थे। घासकी बहुतायत थी। जईके भी कई खेत दिखाई पड़े। मैं चौकन्ना हो इधर उधर देखता चला जाता था। मनमें यह डर था कि कहीं पीछे या अगल बगलसे कोई हमला न करे या अचानक कोई तीरही न चला बैठे। इतनेमें एक सड़क दिखाई पड़ी जिस पर मनुष्यके, पशुओंके विशेष कर घोड़ोंके पद चिन्ह थे। आखिर मैदानमें कई जानवर देखे—दो चार पेड़ पर बैठे हुए थे। उनकी सूरतें अजीब और भद्दी थीं। देख कर जी घबरा उठा। उन्हें भली भांति देखनेके इरादेसे मैं एक

झुरमटमें लेट रहा। उनमेंसे कुछ जानवर जरा नजदीक आपहुंचे। अब मैंने उन्हें अच्छी तरह देख लिया। उनके सिरोंमें तथा छातियों में घने घूंघरवाले बाल थे। दाढ़ियां बकरेकी सी थीं। पीठके नीचे तथा पैरोंमें आगेकी तरफ लम्बे लम्बे बाल लटकते थे मगर बाकी शरीर साफ था। रङ्ग हलका पीला था। दुम नहीं थी पर पीछे बाल जरूर थे। वह अकसर पिछले पैरोंसे खड़े होते थे। पञ्जों के नख लंबे, तेज और टेढ़े थे इसीसे वह गिलहरियोंकी तरह ऊंचे पेड़ों पर चढ़ सकते थे। वह बड़ी फुर्तीसे उछलते, कूदते और फांदते थे। स्त्रियां पुरुषोंकी तरह बड़ी न थीं। सिर पर लंबे पतले बाल थे पर मुंह सफाचट थे। आगे पीछे तथा तमाम देहमें छोटे छोटे बाल थे। स्तन पैर तक लटकते थे और चलनेमें भूमिको चूमते थे। इनके बाल भूरे, लाल, काले और पीले थे। सारांश यह कि ऐसे कुरूप जानवर मैंने और कभी नहीं देखे। न जाने क्यों उन्हें देख कर बड़ी घृणा होती थी। जितना देखा उतनेही से जी घबरा गया। उठ कर फिर सड़कसे जाने लगा। बहुत दूर नहीं गया था कि इन्हीं जानवरोंमेंसे एकको देखा जो बीच रास्तेमें खड़ा था। वह मेरी ओर बढ़ने लगा। वह मुझे ऐसे ढङ्ग से देखता था मानो पहले कभी देखा नहीं। उसका मुंह बनाना भी विचित्रही था। जरा और पास आकर उसने पञ्जोंको उठाया। क्यों उठाया सो राम जाने। लेकिन मैंने कटार निकाल कर उलटी तरफसे एक भरपूर हाथ जमाया। सीधी तरफसे मारने की हिम्मत न पड़ी। कहीं कुछ होजाय तो गांववाले गुस्से होंगे यही समझ कर मैंने उलटी ओरसे मारा था। चोट लगतेही वह पीछे हटा और बड़े जोरसे चिल्लाया। उसकी चिल्लाहट सुनकर बीसियों जानवर गुर्राते और मुंह बनाते दौड़ आए। मैं दौड़ कर एक पेड़से पीठ लगा कर खड़ा होगया और कटार घुमा कर उन सबको भगाता रहा। कुछ दुष्ट पीछेकी तरफसे डालियोंके सहारे पेड़ पर चढ़ गये और वहांसे मेरे सिर पर मल मूत्र त्यागने

लगी। पेड़के नीचे आश्रय लेकर मैं बहुत बचा लेकिन तो भी कपड़े सब खराब होगये।

इतनेमें अचानक सबके सब भाग गये। मुझे बड़ा अचरज हुआ कि वह सब इतनी जल्दी क्यों भागे। मैं फिर सड़क पर आया। बाईं ओर एक घोड़ेको धीरे धीरे घूमते देखा। अब मैं समझ गया कि वह सब इसी घोड़ेको देख कर भागे थे। घोड़ा जब पास आया तो मुझे देख कर जरा ठठक गया। फिर सम्हल कर ताज्जुबसे मेरी तरफ निहारने लगा। उसने चारों ओर घूम घूम कर मेरे हाथ पैरोंको देखा। मैं आगे बढ़ जाता लेकिन वह रास्ता रोके बीचमें खड़ा था कुछ देर तक हम दोनों परस्पर देखा देखी करते रहे। आखिर मैंने साहस करके सवारोंकी तरह ठोंकने और पुचकारनेके लिये उसकी गर्दनकी तरफ हाथ बढ़ाया। किन्तु घोड़को मेरा पुचकारना नहीं भाया। उसने गर्दन हिला भौंह चढ़ा और दाहिना पैर धीरे धीरे उठा कर मेरा हाथ हटा दिया। फिर दो चार बार हिनहिनाया। उसका हिनहिनाना भी अजब था। मालूम हुआ जैसे वह अपनी भाषामें आपही आप कुछ बोल रहा है।

जब मैं और वह इस प्रकार खड़े थे एक घोड़ा और आपहुंचा। दोनों घोड़ोंने कायदेसे खुर मिलाए। बारीबारीसे हिन हिनाये। खर ऊंचा नीचा तथा उच्चारण स्पष्ट था। कुछ दूर हट कर दोनों घोड़े आपसमें कुछ सलाहसी करने लगे। कोई भारी विषय विचारनेके समय जैसे लोग टहलते हैं उसी प्रकार वह दोनों भी टहलते थे कि कहीं मैं भाग न जाऊं। अज्ञान पशुओंमें ऐसी ऐसी बातें देख कर मेरे आश्चर्य्यका ठिकाना न रहा। मैंने विचारा कि जब इन पशुओंमें इतनी बुद्धि है तो यहांके मनुष्यमें न जाने कितनी बुद्धि होगी? वह विश्व भरके मनुष्योंसे अवश्य बुद्धिमान होंगे। यह विचार कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैंने दोनों घोड़ोंको सलाह करते हुए छोड़ कर वहांके निवासियोंसे चटपट मिलनेका सङ्कल्प मनमें किया। ज्योंही मैं चला पहले घोड़ेने जो अबलकथा देखलिया।

वह इतने जोर और इस ढङ्गसे हिनहिना उठा कि मैं जहांका तहां रुक गया और उसके पास चला गया। लेकिन अपने डरको जहां तक बना छिपाया। इस आफतसे अब कैसे पिण्ड छूटेगा इसीका मुझे भय तथा चिन्ता हुई थी। पाठक सहजमें समजझ सकते हैं कि इस हालतमें रहना मुझे बहुत पसन्द न था।

दोनों घोड़े मेरे निकट आए और बड़े भावसे मेरे हाथ और मुँहको देखने लगे। अवलक घोड़ेने अपने दायें अगले सुमसे मेरी टोपीको खूब रगड़ा। इतना रगड़ा कि वह अपनी जगहसे हिल गई। मैंने उसको उतार कर फिर सिर पर दे लिया। इस पर उसने और उसके साथीने जो समन्द रङ्गका था बड़ा आश्चर्य्य माना। पिछले सुमसे मेरे कोटके दामनको छुआ उसे देहसे अलग लटकता देख उनके आश्चर्य्यकी मात्रा और भी बढ़ गई। दायें हाथ को सुमसे ठोंका मानो उसके रङ्ग और कोमलताकी वह प्रशंसा करता था। लेकिन उसने मेरे हाथको ऐसे जोरसे दबाया कि मैं चिल्ला उठा। फिर तो दोनों आहिस्ते आहिस्ते मुझे छूने लगे। जूते और मोजे देख कर शायद उन्हें बहुत ताज्जुब हुआ था वह दोनों उन्हें प्रायः छूते और आपसमें हिनहिनाते थे। उस समय उनकी भाव भङ्गी ठीक वैसीही होती थी जैसी विज्ञानवाजों की किसी नई बातके हल करनेमें होती है।

घोड़ोंकी बुद्धिमानी तथा मनुष्यके सदृश आचार व्यवहार देख कर मैंने विचारा कि यह जरूर कोई जादूगर हैं। किसी कार्य्य विशेषके कारण रूप बदल कर यहां विचरण करते हैं और विदेशी समझ कर मुझसे खेल करते हैं अथवा यहांके आदमियोंसे मेरी रूप रङ्ग पोशाक नहीं मिलती है इससे यह विस्मित हैं। पहलीही बातको युक्ति युक्त समझ कर घोड़ोंसे मैं यों कहने लगा—"सज्जनो! अगर आप जादूगर हैं जैसा कि मैं समझता हूं तो आप अवश्य सब भाषायें समझते होंगे। इस लिये मैं साहस करके निवेदन करता हूं कि मैं एक दरिद्र दुःखी अंग्रेज हूं। भाग्यके फेरसे यहां



नं० १२

प्रभु स्वयं प्रतिदिन दो चार घंटे मेरे साथ माथा खाली करते थे।

पृष्ठ १८६

आपड़ा हूं। कृपा कर आप दोनों में से कोई एक सज्जन अपनी पीठ पर बिठा कर मुझे किसी गांवमें पहुंचा दें। मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा और यह कड़ा और छुरी (पाकेटसे निकाल कर) आपकी भेंट करूंगा।" मैं जब बोलता था तो दोनों जानवर बड़े ध्यानसे खड़े खड़े सुनते थे। मेरी बात पूरी होजाने पर वह दोनों पुनः हिनहिनाने लगे। उनकी भाषा मनका भाव अच्छी तरह प्रगट करती थी। चीनी भाषाकी अपेक्षा इन घोड़ोंके शब्दोंकी वर्णमाला सहजमें बन सकती है।

उनके मुंहसे "याहू" निकलता था। इसका अर्थ मैं क्या मेरे पुरखे भी न जानते होंगे। परन्तु इस शब्दको सीखनेके वास्ते मैं चेष्टा करने लगा। ज्योंही घोड़े चुप हुए मैं जोरसे—"याहू याहू" कहके चिल्ला उठा। जहां तक बना उनके हिनहिनानेकी भी नकल मैंने की। इस पर तो वह दोनों और भी चकराए। अबलकने दो बार—"याहू याहू" कहा मानो वह उसका ठीक उच्चारण बतलाता था। मैं भी उसके साथ साथ बोलता गया। हर बार कुछ न कुछ उन्नति करता जाताथा। परन्तु शुद्ध उच्चारण भला तुरतही कैसे होता? समन्दने तब दूसरा शब्द सिखानेकी चेष्टा की। लेकिन इसका उच्चारण करना जरा टेढ़ी खीर था —"हौयहनहनम।" पाठकों के सुबीतेके लिये इसी शब्दको—"हिन हिन" बना डाला है। "याहू" की तरह अनायास इसमें सफलता प्राप्त न कर सका। पीछे मेरी योग्यता देख उन्हें बड़ा अचरज हुआ।

कुछ देर तक और दोनोंमें बात चीत होती रही जो मैं समझता हूं मेरेही बारेमें थी। फिर दोनों घोड़े सुम मिलाकर बिदा हुए। अबलकने आगे आगे चलनेके लिये मुझे इशारा किया। जब तक और कोई राह बतानेवाला न मिल जाय तब तक उसीका कहना मानना मैंने उत्तम समझा। जब मैं धीरे धीरे चलता तो वह—"हुन हुन" करता। मैंने उसका अभिप्राय समझ कर उस

को संकेतसे यथा शक्ति समझानेकी चेष्टाकी कि मैं थक गया हूं तेजीसे नहीं चल सकता। इस पर वह ठहर जाता और मैं उतनी देर विश्राम कर लेता था।

द्वितीय परिच्छेद।

करीब तीन मील चलनेके बाद हम एक बड़े मकानके पास पहुंचे जो लकड़ीके खम्भों पर बना हुआ था और जिसका छप्पर नीचा तथा फूसका था। अब मेरा चित्त जरा ठिकाने हुआ। जेब से कुछ खिलौने निकाले। सोचा घरवालेको देकर मित्रता करूंगा। यात्री लोग अक्सर इसी प्रकार खिलौने देकर अमेरिका आदिके असभ्य जङ्गलियोंसे मेल मिलाप बढ़ाते हैं। घोड़ेने मुझको पहले भीतर घुसनेके लिये संकेतसे कहा। मैं भीतर घुसा। यह एक बड़ा कमरा था। जमीन कच्ची और चिकनी थी। एक ओर दूर तक नांदें गड़ी हुई थीं। तीन बछेरे और दो घोड़ियां वहां दिखाई पड़ीं जो खाती नहीं थी। किसी किसीको पीछे बल बैठे देख कर आश्चर्य हुआ। सबसे अधिक आश्चर्य तो हुआ उनको गृहस्थीका काम काज करते देख कर। यह मामूली दरजेके मवेशी थे। यह चरित्र देख कर मेरा पहला भाव दृढ़ होगया कि जो मनुष्य अज्ञान पशुओं को इतना सभ्य बना सकते हैं वह न जाने कैसे बुद्धिमान होंगे। वह अवश्य बुद्धिमें सबसे आगे होंगे। पीछे अबलक भी तुरत आ पहुंचा। शायद कोई कुछ छेड़ छाड़ करता परन्तु उसके आजाने से किसीने कुछ नहीं कहा। घरका मालिक जैसे हुकूमत करता है वैसेही वह कई बार हिनहिनाया। उन सबने भी अदबके साथ हिनहिना कर जवाब दिया।

इस कमरेके बाद तीन बड़े बड़े कमरे और थे जिनमें आमने सामने तीन दरवाजे थे। हम दूसरेमें होकर तीसरेकी तरफ चले। अबके घोड़ारामही पहले भीतर घुसे और मुझे ठहरनेके लिये संकेत कर गये। मैं दूसरे कमरेमें खड़ा रहा। इतनी देरमें मैंने

घरके मालिक मलकिनीके वास्ते सौगात ठीक करली। दो छुरियां, झूठे मोतियोंके तीन कड़े, एक छोटासा आईना और एक माला जेबसे बाहर निकाली। घोड़ेने दो चार बार हिनहिनाके कुछ कहा। मैं बदलेमें किसी मनुष्यके शब्दकी अपेक्षा करने लगा। लेकिन सिवाय हिनहिनाहटके और कोई शब्द सुनाई न पड़ा लेकिन पहलीसे यह कुछ तीक्ष्ण अवश्य थी। मैं सोचने लगा कि यह किसी बड़े रईसका मकान है इसीसे भीतर जाने देनेके लिये इतना बन्दोबस्त और इतनी तैयारियां हैं। पर इस बड़े आदमीके सब काम घोड़ोंहीसे चलतेहैं सो मेरे ध्यानमें न आया। मैंने समझा आफत और दुःख झेलते झेलते मैं पागल होगया हूं। मैं अपने को सम्हाल कर चारों ओर देखने लगा, यह भी पहलेकी भांति मगर सुन्दरताके साथ सुसज्जित था। मैंने बार बार आंखें मलो पर वही सब चीजें देखनेमें आईं। देहमें चुटकियां काटी तो भी अपनेको जागताही पाया। तब मैंने निश्चय करलिया कि यह सब जादू या इन्द्रजालके खेलके सिवा और कुछ नहीं है। अधिक विचारनेका अवसर भी न मिला क्योंकि अश्व प्रभु द्वार पर खड़ेथे और तीसरे घरमें जानेके लिये बुला रहे थे। मैं आपके साथ भीतर गया। वहां एक साफ सुथरी चटाई पर एक परम कमनीय घोड़ी को दो बच्चोंके साथ जिनमें एक बछेरा और एक बछेरी थी पीछे के सहारे बैठे देखा।

मेरे पहुंचतेही घोड़ी उठी और मेरे पास आई। मेरे हाथ मुंहको भली भांति देखा कर नाक भौंह चढ़ाली और दो चार बार—"याहू" शब्दका उच्चारण किया। यद्यपि मैंने पहले पहल इसी शब्दको सीखा था तथापि उसका कुछ अर्थ नहीं जानता था। पीछे जान गया मगर जान कर जन्म भर दुःख हुआ। घोड़ेने फिर सिर हिलाया और—"हुन हुन" शब्द किया। मैं समझ गया कि फिर कहीं चलनेको कहता है क्योंकि सड़क पर भी एक बार इसने ऐसाही किया था। अबके मुझको यह एक दूसरे घरमें ले

गया जो यहांसे कुछ दूर था। वहां पहुंच कर मैंने उन्हीं तीन घृणित जीवोंको जो समुद्र तटसे चलनेके बादही रास्तेमें मिले थे कुत्तों और गदहोंका मांस खाते हुए देखा। रस्सियोंके द्वारा यह शहतीरसे बंधे हुए थे। अगले दोनों पञ्जोंसे पकड़ते और दांतोंसे काट कर खाते थे।

अब प्रभुने एक बछेरेसे जिसका रङ्ग लाल था तीनों जानवरों मेंसे बड़ेको खोल कर आंगनमें लेचलनेको कहा। मैं और वह जानवर पास पास खड़े किये गये। मालिक नौकर दोनोंने मिल कर हमारे चेहरोंको खूब मिला कर देखा। उनके मुंहसे बराबर—"याहू याहू" ही निकलता था। इस जघन्य जानवरकी सूरत ठीक आदमीसी देख कर मेरे आश्चर्य्य और भयकी कुछ सीमा न रही। चेहरा सचमुच चिपटा और चौड़ा था, नाक बैठी हुई ओठ बड़े मुंह लम्बा था। सब जङ्गली जातियोंसे तो इतना भेद होता ही है क्योंकि यह लोग अपने अपने बच्चोंको जमीनमें पट सोने देते हैं या पीठ पर लादे फिरते हैं। बच्चे भी अपने मुंहको मांकी पीठसे रगड़ा करते हैं इसीसे इनकी सूरत शकल बिगड़ जाती है। मेरे हाथों और उसके अगले दोनों पैरोंसे केवल इतनाही भेद था कि उसके नख बड़े बड़े थे, हथेली खुरदरी और पिङ्गल वर्ण थी तथा पीछे बाल थे। पैरोंमें भी बस इतनाही भेद था। मैं तो समझ गया परन्तु मेरे जूते और मोजेके कारण घोड़े इस भेदको न समझ सके। देहमें भी रङ्ग और बालहीका अन्तर था जैसा कि मैं लिख चुका हूं।

याहूके शेष अङ्गोंसे मेरे अङ्गोंमें इतना अन्तर देख कर दोनों घोड़ बड़े कठिनाईमें पड़े। इस अन्तरका कारण मेरे कपड़े थे जिनका घोड़ोंको कुछ भी ज्ञान न था। लाल घोड़ेने मुजमेंसे उठा कर एक सड़ा टुकड़ा मेरे हाथमें दिया। मैंने लेलिया और सूंघ कर सभ्यताके साथ लौटा दिया। उसने याहूओंके घरमेंसे गदहे का मांस लाकर दिया लेकिन उससे ऐसी सड़ी गन्ध आती थी कि

मैंने नाक सिकोड़ कर मुँह फेर लिया। उसने उस मांसके टुकड़े को याहूके आगे फेंक दिया। याहूराम सब भकोस गये। फिर उसने एक पूला घास तथा जई दिखाई। लेकिन मैंने तब भी सिर हिला दिया और बता दिया कि यह सब मेरा अहार नहीं है। मैंने विचारा कि अगर किसी मनुष्यका दर्शन न होगा तो मैं भूखों मर जाऊंगा। यद्यपि मानव जातिके प्रेमी मुझसे अधिक बहुत ही कम होंगे तथापि मैं सत्य कहता हूं कि इन याहूओंकी तरह सब प्रकारसे जघन्य नीच घृणित जीव मैंने नहीं देखे। जितना मैं उनसे सटता उतनेही वह और भी घृणित मालूम होते थे मेरी यह दशा देख कर अश्व प्रभुने याहूको थान पर लेजानेका हुक्म दिया और अगले सुमको अपने मुँह पर आसानीसे रख कर कुछ इशारा किया जिसका मतलब यही था कि मेरा आहार क्या है। घोड़ेकी इस कार्रवाईसे मुझको बड़ा अचरज हुआ। पर मैं ऐसा जवाब न देसका कि वह मेरा भाव समझ जाता। अगर समझ भी गया हो तो क्या वह मेरे खाने पीनेका बन्दोबस्त कर सकता था? जब हम लोग इस प्रकार इशाराबाजीमें लगे हुए थे मैंने एक गायको बगलसे जाते हुए देखा। मैंने चट पट उसकी तरफ बता कर उसको दूहनेका इशारा किया। अबकी काम बन गया। वह मुझे घर लौटा लाया। दाईं घोड़ीको एक कोठरी खोलनेका हुक्म दिया। किवाड़ खुलतेही देखा कि मट्टी और लकड़ीके साफ सुथरे बर्त्तनोंमें दूधका ढेर लगा हुआ है। उसने एक कटोरा लबालब भरके दिया। मैं सब पीगया तब जी ठिकाने हुआ।

दोपहरको घरकी तरफ एक गाड़ी जिसमें चार याहू जुते हुए थे आती हुई दिखाई दी। इस गाड़ीमें एक भी पहिया न था और इसकी बनावट विमानसी थी। इस पर एक वृद्ध घोड़ा चढ़ा हुआ था जो ऊंचे पदका मालूम होता था। गाड़ी घरके पास आकर खड़ी हुई। वह पिछले पावोंको बढ़ा कर उतरा क्योंकि अचानक कहीं उसके अगले बायें पैरमें चोट लग गई थी। वह हमारे

घोड़ेके यहां न्यौता खाने आया था। गृह स्वामीने खूब आदर सत्कार किया। सबसे अच्छे कमरेमें पांति बैठी। घासके सिवा जई की खीर भी परसी गई। और सबने तो ठंडी परन्तु बूढ़ेने गर्म गर्म खीर उड़ाई। बीच कमरेमें नादें मण्डलाकार सजाई गई थीं जिनके चारों ओर घोड़े सब फूमके मोटे आसनों पर पुट्ठे टेक कर बैठे थे। नादें कई हिस्सोंमें बंटी हुई थीं। बीचमें सूखी घाससे भरा पहलदार एक कठौता था जो नादोंसे मिला हुआ था। प्रत्येक घोड़ा और घोड़ी मजेमें खूबसूरतीके साथ अपनी अपनी घास और खीर खाती थीं। बछेरे बछेरियां बहुत शान्त थीं। घरके मालिक तथा मलकिनो बहुत प्रसन्न तथा पाहुनेको आराम पहुंचानेके लिये सब तरहसे मुस्तैद थी। अबलकने अपने पास खड़े रहनेको मुझे हुक्म दिया। दोनोंमें बहुत देर तक बात चीत होती रही। बूढ़ा घोड़ा अकसर मेरी तरफ देखता तथा— याहू याहू" कहता था इस से मैं अनुभव करता हूं कि मेरेही विषयमें वह दोनों बोलते थे।

मैं उस समय दस्ताने चढ़ाये हुए था। अबलक मेरे हाथकी दशा देख कर घबड़ा गया। उसने दो चार वार अपना सुम मेरे हाथसे छुलाया मानो हाथोंको फिर पहली अवस्थामें लानेके लिये कहता था। मैंने तुरत दस्ताने उतार जेबमें रख लिये। यह देख वह सब प्रसन्न हुए और इसका सुन्दर फल भी मुझको जल्दी मिल गया। जो दस पांच शब्द मैंने सीखे थे सो बोलनेकी आज्ञा हुई। जब तक यह सब उधर खाते थे तब तक इधर अश्व प्रभुने जई, दूध, आग, पानी वगैरहके नाम सिखा दिये थे। मैं उनका उच्चा-रण अच्छी तरह कर सकता था क्योंकि लड़कपनहीसे बोलियां सीखनेकी मुझको अच्छी योग्यता थी।

पांति उठ जाने पर अश्व प्रभुने एक ओर लेजाकर मेरे भोजन के लिये संकेत द्वारा चिन्ता प्रगट की। उनकी भाषामें जईका नाम—"ह्लन्‌ह" है। मैंने इस शब्दका उच्चारण दो चार बार किया। पहले तो मैंने जइसे इनकार किया था पर पीछे सोचा कि जब तक

यहांसे निकास न हो तब तक जईकी रोटियां और दूध प्राण बचाने के लिये बहुत हैं। इसीसे मैंने जई मांगीथी। उसने इतना सुनतेही उजले रङ्गकी घोड़ीसे जो घरकी दाई थी जई लानेके वास्ते आज्ञा दी। वह कठौतेमें ढेरसी जई लेआई। मैंने उसे आगसे गर्म किया और हाथोंसे मसल कर उसकी भूसी निकाल दी। दो पत्थरोंसे कूट काट कर उसका आटा बनाया। पानी लाकर आटा गून्धा फिर रोटियां पकाईं। गर्म गर्म रोटियां दूधके साथ खाईं। यद्यपि युरोपके प्रायः बहुतेरे आदमियोंकी यह खूराक है तथापि मुझको पहले बिलकुल फीकी मालूम पड़ी पर पीछे अभ्यास पड़ गया। रूखा सूखा अकसर खाना पड़ा है अतएव इस तरह पेट भर लेना मेरे लिये कोई नई बात न थी। जब तक मैं वहां रहा एक घड़ीके लिये भी मेरे सिरमें कभी दर्द न हुआ। मैं कभी कभी याहुओंके बालके फन्दोंसे खरगोश और चिड़ियोंका शिकार जरूर करता था। पुष्ट जड़ी बूटियां इकट्ठी करता और साग बना कर रोटियोंके साथ अकसर खाता और जायका बदलनेके लिये कभी कभी मक्खन निकालता और छाछ पीता था। पहले तो नोन बिना कष्ट हुआ पर जब अनोना खाते खाते अभ्यास पड़ गया तो उसकी याद भी नहीं आतीथी। मुझे विश्वास है कि हम लोगोंमें लवणका इतना प्रचार होना बस भोग बिलास हो का फल है। बड़ी बड़ी लम्बी समुद्र यात्राओंमें अथवा बड़े बड़े बाजारोंसे दूर जगहोंमें मांस लेजानेके लिये उसमें नोन डालनेकी जरूरत पड़ती है क्योंकि नोन पड़नेसे मांस सड़ता नहीं। इसके सिवा केवल सुरापानकी रुचि बढ़ानेहीके लिये पहले पहल हम लोगोंमें लवणका व्यवहार हुआ था। क्योंकि देखा जाता है कि आदमीके सिवा और किसी जीवको नोन नहीं भाता। और मैं अपनी कहता हूं कि हिनहिनदेशसे लौट आने पर बहुत दिनों तक किसी वस्तुमें भी मुझसे नोन नहीं खाया जाता था।

मैं अपने खाने पीनेके विषयमें बस इतनाही लिखना अलम्

समझता हूं पर और भ्रमणकारी लोग तो इसी विषयसे अपनी किताबें भर देते हैं मानो उनके खाने पीनेसे पाठकोंको बड़ा भारी सरोकार है। जो कुछ हो, इतना लिखना भी मैंने इसलिये जरूरी समझा कि शायद कोई पीछे यह न कह बैठे कि तीन वर्ष तक ऐसे देशमें और ऐसे निवासियोंके बीचमें आहार मिलना असम्भवहीथा।

जब सांझ हुई तो अश्व प्रभुने मेरे रहनेके लिये अलग बन्दोबस्त कर दिया। मेरा डेरा अश्वालयसे कुल छः गजके फासले पर था और याहुओंके तवेलेसे एक दम जुदा था। फूसका विस्तर और फूसहीका सिरहाना बनाया। अपने कपड़ोंसे देह ढांक कर खूब सोया। थोड़ेही दिनके बाद सुखकी सब सामग्रियां इकट्ठी होगई और मैं सुखसे रहने लगा जिसका हाल आगे चल कर विस्तार पूर्वक सुनाऊंगा।

तृतीय परिच्छेद।

मैं घोड़ोंकी भाषा सीखनेके लिये पूर्ण चेष्टा करने लगा। अब मैं अश्व प्रभुको केवल प्रभु लिखा करूंगा। प्रभु, प्रभुके लड़के तथा नौकर चाकर सबही मेरे गुरु बनना चाहते थे। वह मुझसे अज्ञान जानवरको ऐसा वर्त्ताव करते देख कर बड़ा अचम्भा मानते थे। जो कुछ मैं देखता सबका नाम इशारेसे पूछता और जब एकान्त होता तो डायरीमें लिख लेता था। जब भूलता तो उच्चारण पूछ लेता। लाल बछेरेसे जो घरका नौकर था बहुत मदद मिलती थी।

घोड़े कण्ठ और नाकसे बोलते थे। उनकी बोली हौलेण्ड या जरमनी भाषासे बहुत मिलती थी परन्तु अश्व भाषा उनसे अधिक ललित और सार्थक थी। सम्राट पञ्चम चार्ल्सकी भी यही राय थी। वह कहते थे—"अगर मैं घोड़ोंसे बोलता तो हौलेण्डही की भाषामें बोलता।"

प्रभुको इतना अचम्भा हुआ कि वह धीरज न धर सके। जो

जानसे मुझे अपनी बोली सिखानेमें लग पड़े। अपनी छुट्टीका प्रायः सब समय मेरे साथही व्यतीत करते थे। उन्हें विश्वास होगया था कि मैं जरूर याहू हूँ। लेकिन मेरे सीखनेकी योग्यता, सभ्यता और सफाईसे उन्हें बड़ा आश्चर्य्य होता था क्योंकि यह सब लक्षण याहुओंमें नहीं होते। प्रभुने यह सब पीछे बतलाया था कि मेरे कपड़ोंको देख कर उनकी अकल कुछ काम नहीं करती थी। कभी कभी वह यही समझ लेते कि यह भी मेरे शरीरका एक अङ्गही है क्योंकि जब वह सब रातको सोजाते तब मैं कपड़े उतारता और सवेरे उनके उठनेके प्रथमही पहन लेता था। कहांसे मैं आपड़ा और क्योंकर सब कामोंमें बुद्धिमानी प्रगट करता हूँ इत्यादि बातें जाननेके लिये प्रभु नितान्त उत्सुक थे। वह मेरेही मुँहसे मेरी कहानी सुनना चाहते थे। जिस फुर्तीसे उनकी भाषामें मैं व्युत्पन्न होता जाताथा उससे उन्हें पूरी आशा थी कि मैं बहुत जल्द उनकी अभिलाषा पूरी करूंगा। जो कुछ मैं सीखता सब अर्थ सहित अंग्रेजीमें लिख लेता था। पहले तो मैं छिपा कर लिखता था पर कुछ दिनके बाद उनके सामनेही लिखने और तर्जमा करने लगा। मैं क्या करता हूं सो समझानेमें मुझे बड़ी कठिनता हुई। क्योंकि पोथियां या साहित्य किस पचीका नाम है सो वहांवाले बिलकुल नहीं जानते।

मैं उनके बहुतसे प्रश्न करीब दस सप्ताहमें समझने लगा और तीन महीनेमें कुछ कुछ जवाब देनेके लायक भी होगया। अब प्रभुसे न रहा गया। वह चटपट मेरे सफरका हाल पूछ बैठे। और सब मेरे अङ्ग तो कपड़ेके भीतर थे केवल हाथ, मुंह और सिर दिखाई पड़ते थे। इन अङ्गोंको याहुओं कैसे देख कर प्रभुने मुझे भी याहूही समझा। याहू बड़ेही धूर्त्त और दुष्ट होते तथा कभी सीख नहीं मानते थे। मगर मेरा बर्ताव कुछ निरालाही था। यह देख प्रभु और भी हैरान थे। इसीसे उन्होंने पूछा था—"तुम कहां से आये और समझदारोंकी तरह काम करना तुमने कहां सीखा?"

मैंने जवाब दिया—"मैं सात समुद्र तेरह नदी पारसे लकड़ीके एक पोले बड़े पात्र पर चढ़के यहां तक आया हूं। मेरी जातिके और कई लोग मेरे साथ थे। मेरे साथियोंने जबरदस्ती मुझको तीर पर उतार दिया और आप चलते बने।" कुछ बोल कर कुछ बतला कर बड़ी मुश्किलसे इतनी बातें प्रभुको समझाईथीं। प्रभुने कहा—"तुम भूलते हो। तुमने जो कहा सो नहीं है।" अर्थात् झूठ है। झूठका प्रति शब्द उनकी भाषामें नहीं है। समुद्रके बाद कोई देश होना या जानवरोंका जहाजके द्वारा समुद्रमें जहां चाहे तहां चला जाना प्रभुकी समझसे असम्भवही था। उन्हें निश्चय था कि कोई हौयहनहनम जहाज नहीं बना सकता है और न कोई इसके चलानेका काम याहुओंके सपुर्द कर सकता है।

हौयहनहनम अर्थात् हिनहिन उनकी भाषामें घोड़ेको कहते हैं। इसकी व्युत्पत्ति है—"प्रकृतिकी पूर्णता।" मैंने प्रभुसे कहा कि अभी मैं आपकी बोली अच्छी तरह बोल नहीं सकता। लेकिन जहां तक बनेगा जल्दी इसके बोलनेकी कोशिश करूंगा। आशा है कि थोड़ेही दिनोंमें मैं आपको आश्चर्यमें डालनेवाली बातें सुनानेके योग्य हो जाऊंगा। इतना सुनतेही उसने अपनी घोड़ी, बछेरे, बछेरी तथा नौकरोंको मेरे पढ़ानेके लिये हुक्म दे दिया। जिसको मौका लगता था वही मुझको पढ़ाता था। इसके सिवा प्रभु स्वयं प्रतिदिन दो चार घण्टे मेरे साथ माथा खाली करते थे। आस पासके सब गावोंमें बात फैल गई कि एक विचित्र याहू आया है जो हिनहिनकी तरह बोलता तथा अपने चाल चलनसे चतुर मालूम होता है। फिर क्या था लगी अच्छे अच्छे घरकी घोड़ियां सब मेरे यहां आने। वह सब आकर मुझसे बात चीत करतीं और प्रसन्न होती थीं। जो कुछ पूछतीं उसका जवाब उन्हीं की बोलीमें यथाशक्ति दे देताथा। इससे फल यह हुआ कि पांचही महीनेमें मैं वहांकी भाषा अच्छी तरह समझने लगा तथा एक प्रकारसे बोलने भी लगा।

वह हिनहिन जो देखने तथा मुझसे बोलने आया था मुझको ठीक याहू नहीं कहता था क्योंकि मेरे शरीर पर एक जुदा ढङ्गकी खाल थी। इसके सिवा याहुओंकेसे मेरे बाल नहीं थे। लेकिन यह भेद पन्द्रह दिनके बाद प्रभुको अकस्मात् मालूम होगया।

पाठकोंसे मैं पहलेही निवेदन कर चुका हूं कि रातको जब सब सो जाते थे तब मैं कपड़े उतारता और सवेरे सबके उठनेके पहलेही पहन लेता था। एक दिन बड़े तड़के प्रभुने मेरे बुलाने के लिये अपने नौकर लाल बछेरेको भेजा था। जब वह आया मैं खर्राटे लेरहा था, कपड़े अलग एक तरफ रखे थे और कमीज कमरके ऊपर पड़ी थी। उसकी आवाज सुन कर मैं चौंक उठा तो देखा कि वह घबड़ानासा कुछ कह रहा है। सन्देसा सुना कर वह तुरत नौ दो ग्यारह हुआ। जो कुछ उसने देखा था उस का न जाने क्या गड़बड़ सड़बड़ हाल प्रभुसे जाकर कह दिया। कोट पटलून डाट कर जब मैं वहां पहुँचा तो प्रभुने देखतेही पूछा— "क्या सोने पर तुम कुछ औरही तरहके मालूम होते हो ? बछेरा कहता था कि तुम्हारा कोई अङ्ग उजला, कोई पीला और कोई भूरा है।"

याहू बनाये जानेके डरसे अबतक मैंने लिबासके भेदको छिपाया था पर सब वृथा हुआ। अब और छिपाना उचित नहीं समझा। अगर छिपाता भी तो अब छिप नहीं सकता क्योंकि मेरे कपड़े जूते सब पुराने होगये थे। थोड़ेही दिनके बाद बेकाम होजाते। फिर याहुओंकी अथवा और किसी जानवरोंकी खालसे देह ढांकनेका कुछ न कुछ उपाय करनाही पड़ता जिससे सब बातें पीछे आपही खुल जातीं। इस लिये प्रभुवरसे मैंने स्पष्ट कह दिया कि उस देशमें जहांसे मैं आया हूं मेरी जातिवाले सब सर्दी गर्मीसे बचने तथा लज्जा निवारणके लिये अपने अङ्गोंको किसी किसी जीवके बालोंसे बने हुए कपड़ोंके द्वारा सदा ढांके रहते हैं। अगर आप आज्ञा दें तो मैं सबूतके लिये अपना बदन खोल कर दिखला सकता हूं परन्तु

एक प्रार्थना है कि प्रकृतिने जिन अङ्गोंको छिपानेके लिये बताया है उन्हें न खोलूंगा। इतना सुन कर प्रभु बोले—"तुम्हारी बिलकुल बातेंही अनूठी हैं विशेष कर पिछली तो अत्यन्त है। मेरी समझ में यह नहीं आया कि प्रकृतिने जो कुछ दिया है उसके छिपानेके लिये वही क्यों बताने लगी। मैं और मेरे घरवाले तो किसी अङ्ग की लाज नहीं करते हैं। खैर, जो तुम्हें भावे सो करो।" इस पर मैंने पहले बटन खोले फिर कोट उतार डाला। पीछे फतुही, पटलून, मोजे और जूते भी उतार दिये। परदेके लिये कमीजको सरका कर कमरसे लपेट लिया।

प्रभुने बड़े आश्चर्य और कौतूहलसे मेरे इस कामको अवलोकन किया। मुजम्मेमें लेकर हर एक कपड़ेको गौरसे देखा, मेरी देह को धीरे धीरे सहलाया और घूम घूम कर खूब देखा भाला। बहुत सोच विचार कर आप बोले—यह तो निश्चयही है कि तुम याहू हो मगर इन याहुओंसे और तुमसे बड़ा फर्क हैं। तुम्हारा चमड़ा साफ, चिकना और मुलायम है। तुम्हारे शरीरके बहुतेरे हिस्सोंमें बाल नहीं हैं पञ्जे भी तुम्हारे छोटे और दूसरे ढङ्गके हैं। तुम सदा पिछले पैरोंसे चलते हो इत्यादि।" इसके बाद आपने कपड़े पहनने का हुक्म दिया। मैं भी सर्दीसे कांप रहा था इससे चटपट आप का हुक्म तामील किया।

मैंने कहा—"आप बार बार याहू कहते हैं तो मेरी आत्माको बड़ी व्यथा पहुंचती है क्योंकि यह कुत्सित जीव मुझको फूटी आंख भी नहीं सुहाते। इन्हें देख कर न जाने क्यों मुझको घृणा होती है। इसलिये हाथ जोड़ता हूं मुझको याहू न कहा कीजिये और अपने घरवालों तथा इष्ट मित्रोंसे भी कह दीजिये कि कोई मुझको याहू न कहा करे। एक प्रार्थना और है कि मेरे कपड़ेका हाल आपके सिवा और कोई जानने न पावे। अस्ततः जब तक यह कपड़े फट न जायं तब तक किसीसे कुछ मत कहिये और लाल बछेरेसे भी कह दीजिये कि किसीसे कुछ न कहे।"

प्रभुने सानुग्रह प्रार्थनाको स्वीकार किया। जब तक वस्त्र फटे नहीं किसीने इस रहस्यको नहीं जाना। फिर मैंने क्या प्रबन्ध किया सो आगे चल कर लिखूँगा। प्रभुकी आज्ञासे मैं फिर जी जान लगा कर उनकी बोली सीखने लगा। मेरे यहांकी बातें सुननेके लिये वह बहुत व्यग्र थे। मेरी योग्यता देख वह बहुत विस्मित होते थे।

अब वह और भी दूनी मिहनतसे मुझको वहांकी भाषा सिखाने लगे। सब अपने सङ्ग मुझको लेजाते थे। कोई मुझसे छेड़ छाड़ नहीं करता था। छेड़छाड़के लिये उन्होंने सबको मना कर दिया था। मेरी अनूठी बातें सुननेहीके लिये यह सब सुप्रबन्ध किया गया था।

पढ़ानेमें वह कड़ाचूर परिश्रम करतेही थे। इसके सिवा जब मैं उनसे मिलता तो रोज वह मेरा अहवाल पूछते थे। मैं भी यथासाध्य उनके प्रश्नोंका उत्तर देता था। इससे सब बातों का साधारण मगर अधूरा ज्ञान उनको होगया था। कब कैसे कौन बात हुई सो लिख कर पाठकोंको कष्ट पहुँचाना मैं नहीं चाहता लेकिन मैंने अपने बारेमें यों कहा था:—

"मेरा देश यहांसे बहुत दूर है जैसा कि मैं कह चुका हूं। देशसे हम लोग पचास आदमी जहाजमें जो आपके घरसे बड़ा था बैठ कर चले। वह लकड़ीका बना हुआ था और जल पर तैरता था। आपसमें लड़ाई होजानेके कारण साथियोंने मुझको जहाज से निकाल दिया। मैं बिना समझे बूझे एक ओर चल पड़ा। चलते चलते यहां तक आपहुंचा। रास्तेमें याहुओंने रोका तो आपहीने जाकर छुड़ाया था।" जहां तक बना मैंने अच्छी तरह जहाजका खाका खेंचा। पालसे वह कैसे चलता है सो रुमालसे बतलाया। मतलब यह कि जहाज क्या वस्तु है सो मैंने उन्हें भली भांति समझा दिया था। यह सुन कर प्रभुने पूछा—"अच्छा यह

तो कहो जहाज बनाता कौन है? भला यह कब सम्भव है कि तुम्हारे यहांके ह्विनह्विन इसका प्रबन्ध पशुओंके हाथ सौंपेंगे?"

मैं—अब कुछ कहनेकी हिम्मत नहीं पड़ती। अगर बुरा न मानें तो मैं जवाब देसकता हूं और अपने यहांकी अनूठी बातें भी सुना सकता हूं।

प्रभु—नहीं मानूंगा। मैं कसम खाके कहता हूं कि बुरा न मानूंगा। तुम्हें जो कुछ कहना है सो निडर होके कहो। मैं तुम्हारी बातें सुननेको बहुत बेचैन हूं।

मैं—जहाज तो मेरे जैसे जीवही बनाते हैं। केवल यही जीव मेरे यहां और उन देशोंमें जहांसे मैं हो आया हूं राज्य करते तथा बुद्धिमान गिने जाते हैं। यहां ह्विनह्विनोंको आदमियोंकी तरह काम करते देख कर मुझे उतनाही विस्मय हुआ जितना आप लोगोंको मुझे देख कर हुआ। इन याहुओंकी सूरत शकलें मुझसे मिलती हैं पर मैं नहीं कह सकता यह इतने जङ्गली तथा नीच क्यों होगये। अगर मैं भाग्यके जोर से अपने देशमें पहुंच कर यहांकी बातें कहूंगा तो लोग यही कहेंगे कि "तुमने कहा सो नहीं है।"। कोई भी इसको सम्भव न मानेगा कि: ह्विनह्विनका आधिपत्य याहुओंके ऊपर है। घोड़े आदमियों पर हुकूमत करते हैं यह कौन विश्वास करेगा?

चतुर्थ परिच्छेद।

मेरी बातें सुनकर प्रभुकी सुधबुध काफूर होगई। चेहरेसे बेचैनी टपकने लगी। सन्देह और अविश्वास करनेकी चाल वहां इतनी कम थी कि ऐसे ऐसे मौकों पर क्या करना चाहिये सो वहां वाले नहीं जानते। ऐसे तो प्रभुकी समझ बहुत चोखी थी परन्तु मुझे याद है कि जब कभी मनुष्यके स्वभावकी चर्चा चलती और मैं प्रसङ्ग वश मिथ्या भाषण तथा असत्य वर्णनके बारेमें कुछ कहता तो वह बड़ी कठिनतासे मेरे भावोंको समझते थे। वह कहा करते थे—

"एक दूसरेके मनके भावोंको समझाना और सच्ची बातें सुनानाही बोलनेके उद्देश्यहैं। अगर किसीने वह बात कही जो नहींहै अर्थात् झूठ तो बोलनेके उद्देश्य सिद्ध नहीं हुए। क्योंकि असल बातोंका जानना तो दूर रहा मैं कहनेवालेके तात्पर्य्यको समझता हूँ यह भी नहीं कहा जासकता। फल यह होगा कि मैं ज्योंका त्यों रहूंगा या उससे भी खराब होजाऊंगा क्योंकि तब उजलेको काला और बड़े को छोटा समझने लगूंगा।" इस झूठके बारेमें जिसे मनुष्य लोग पूरे तौरसे समझते और बोलते हैं घोड़ोंका बस यही ख्याल है।

अच्छा अब मैं अपने किस्सेकी तरफ झुकताहूं। जब मैंने कहा कि हमारे यहां याहूही राज्य करते हैं तो यह उनके ध्यानहीमें न आया। प्रभुने पूछा—"क्या तुम्हारे देशमें हिनहिन हैं? अगर हैं तो वह क्या करते हैं?" मैंने कहा—"हां हैं। गर्मीमें तो वह सब मैदानमें चरते, जाड़ेमें तवेलेमें रहते और सूखी घास तथा जई खाते हैं। याहू लोग हिनहिनोंको मलने, खरहरा करने, सुम साफ करने, दाना खिलाने आदिके लिये रक्खे जाते हैं।"

प्रभु—बस बस मैं समझ गया। याहू चाहे कितनेही बुद्धिमान बनें लेकिन तुम्हारे राजा हिनहिनही हैं। मैं जीसे चाहता हूँ कि मेरे याहू भी ऐसेही अकलमन्द होजायं।

मैं—माफ कीजिये अब आगे और कुछ मैं न कहूंगा क्योंकि मुझको विश्वास है कि अगर कुछ कहूँगा तो आप जरूर रुष्ट हो जायंगे।

प्रभु—नहीं नहीं मैं कभी रुष्ट न हूंगा। तुम अच्छा बुरा जो जानते हो सो निर्भय होकर कह जाओ। मैं वादा करता हूं मैं कभी रुष्ट न हूंगा।

मैं—अच्छा तो सुनिये। हमारे यहां हिनहिनको घोड़ा कहते हैं। घोड़े सब जानवरोंसे सुन्दर और भले होते हैं। इनसे बल तेजोमें कोई पशु बढ़ कर नहीं है। बड़े आदमियोंके घोड़े सवारी या घुड़दौड़के काममें आते अथवा गाड़ियोंमें जोते जाते हैं। जब

तक वह चङ्गे रहते हैं उनकी खूब खातिर और हिफाजत होती है लेकिन बीमार या लंगड़े होजानेसे बेच दिये जाते हैं। फिर बिचारोंको अन्त समय तक सब तरहके कठिन परिश्रम करने पड़ते हैं। मरने पर खालें खेंच कर बेच दी जाती हैं और लाशोंको कुत्ते और गिद्ध खाजाते हैं। लेकिन मामूली दरजेके घोड़ोंका ऐसा सौभाग्य कहां! इन्हें किसान और कुली वगैरह नीच लोग रखते हैं जो मेहनत तो खूब लेते पर खानेको कम देते हैं।

इसके सिवा मैंने घोड़ों पर चढ़नेका ढङ्ग वर्णन किया। लगाम, जीन, कांटे, चाबुक साज वगैरह की सूरत शकल बताई। मैंने यह भी कह दिया कि पथरीली राहसे चलनेमें घोड़ोंके सुम अकसर टूट जाते हैं। इसके बचावके लिये घोड़ोंके पैरोंमें एक कड़े पदार्थका पत्तर जड़ दिया जाता है।

यह सुन कर प्रभु बहुत खिन्न हुए। फिर आप बोले—"तुम लोगोंको हिनहिनकी पीठ पर चढ़नेकी हिम्मत कैसे पड़ती है? यहांका कमजोरसे कमजोर हिनहिन याहूको मजेमें दबोच सकता है और पीठपर चढ़नेसे तो उसका कामही तमाम कर सकताहै।"

मैं—आपका कहना ठीक है मगर हमारे देशमें घोड़े बचपनही से सिखाये जाते हैं लेकिन जो जरा बदमाश होते वह गाड़ियोंमें जोते जाते हैं। शैतानी करनेसे खूब पीटे भी जाते हैं। जो घोड़े सवारी या गाड़ीके काममें आते हैं वह दो वर्षके होने पर आखता कर दिये जाते हैं। इससे वह सीधे और शान्त हो जाते हैं। वह सजा और इनामको खूब समझते हैं। पर आप यह निश्चय जान लें कि उनको जरा भी ज्ञान नहीं होता। उन्हें निरे याहूही समझिये।

ऊपर कही हुई बातें प्रभुको समझानेमें मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। क्योंकि उनकी भाषामें शब्दोंका बहुत तोड़ा था। हम लोगों से उनकी आवश्यकता और विषयवासना भी थोड़ी है फिर शब्द आवे कहांसे? इसी लिये बोलनेके समय हाथोंसे, आंखोंसे और

पैरोंसे मदद लेनी पड़ी थी। घूम कर नाक छूनी पड़ी थी। ह्विन ह्विन जातिके साथ हम लोगोंका यह जङ्गली व्यवहार सुन कर उन्होंने किस उत्तम रीतिसे अपना कोप प्रकाश कियाथा सो बताना असम्भव है। उन्हें आखता करनेकी चाल विशेष कर बहुत बुरी लगी क्योंकि इससे घोड़ोंकी स्वाधीनता तथा बंश नास होजाता है। उन्होंने कहा कि अगर कोई देश ऐसा हो जहां केवल याहूको बुद्धिमान हों तो वह जरूर राज्य कर सकते हैं क्योंकि अन्तमें सदा बुद्धिहीकी जय और पशुवलकी पराजय होती है। संसारके कामों के लिये तुम्हारे जैसा कुढङ्ग और कोई सज्ञान जीव नहीं है। इसके बाद आप बोले—"अच्छा यह तो कहो कि तुम जिन लोगोंके साथ रहते हो वह रूप रङ्गमें तुमसे हैं या हमारे याहुओंसे ?"

मैं—मेरी उमरवाले तो मेरेहीसे हैं पर बच्चे और औरतें बहुत सुन्दर और कोमल होती हैं। उनकी देह तो दूधसी उजली होती है।

प्रभु—हां ठीक है। तुमसे और याहुओंसे बड़ा भेद है। तुम बहुत साफ सुथरे तथा एक दम बदसूरत नहीं हो। पर असल फायदेके ख्यालसे तुम याहुओंसे भी गये बीते हो। तुम्हारे अगले या पिछले पैरोंके नख किसी कामके नहीं। तुम्हारे अगले पैरोंको मैं पैर नहीं कह सकता क्योंकि मैंने कभी तुम्हें इनसे चलते देखा नहीं और वह मुलायम भी इतने हैं कि जमीनमें टेके नहीं जा सकते। तुम उन्हें बराबर खुला रखते हो और कभी कभी जो बेठन चढ़ा लेते हो सो पिछले पांवोंके बेठन जैसे मजबूत नहीं हैं। तुम्हारी चाल भी ठीक नहीं क्योंकि हरवक्त गिरनेका डर बना रहता है। अगर पीछेवाले पैरोंमेंसे एक भी फिसला तो धड़ामसे गिर पड़ोगे। तुम्हारा मुंह चपटा है, नाक निकली हुई है, आंखें दोनों ठीक सामने हैं इससे अगल बगलकी चीजें बिना सिर घुमाए तुम देख नहीं सकते। अगला पांव मुंह तक बिना उठाए खा नहीं सकते। इसी लिये हाथोंमें गांठें बनी हुई हैं। पिछले पैर

टुकड़े टुकड़े क्यों हैं? यह इतने कोमल हैं कि चमड़ेके वेठन चढ़ाए बिना तुम तेज पत्थरोंपर चल नहीं सकते। सर्दी गर्मीसे बचनेके लिये तुम्हें अपनी देह पर खोल चढ़ानी और उतारनी पड़ती है। यह भी रोजका एक झंझटही ठहरा। यहांके जितने जानवर हैं सब याहुओंसे घृणा करते हैं। कमजोर तो उनसे किनारा खेंचते और जबरजस्त उन्हें अपने पास फटकने नहीं देते हैं। माना कि तुम बुद्धिमान हो मगर तुमसे सब जानवरोंका जो स्वाभाविक विरोध है सो दूर होना कब सम्भव है और याहुओंका सुधार भी फिर कैसे हो सकता है? इन्हें घरमें रख कर कामके लायक बनाना हमारे बूते हो नहीं सकता। जोहो इस विषयको अब मैं तूल नहीं दिया चाहता। क्योंकि मुझको तुम्हारी कहानी सुननेकी अत्यन्त लालसा लग रही है। तुम्हारा जन्म किस देशमें हुआ और यहां आनेके पहले तुम पर क्या क्या बीती सो कह सुनाओ।

मैं—मैंभी आपको सब तरहसे सन्तुष्ट किया चाहता हूं पर एक बातका बहुत सन्देह है कि जिन विषयोंको आप बिलकुल जानते नहीं उनको भली भांति समझाना सम्भव है या नहीं क्योंकि उपमा देनेके लिये भी यहां वैसी कोई वस्तु नजर नहीं आती है। खैर, मैं कोई बात उठा न रखूंगा। लेकिन आपसे एक प्रार्थना है कि जब आवश्यकता हो तो उचित शब्दोंसे मेरी सहायता करते जाइयेगा।

प्रभुके प्रार्थना स्वीकार करने पर मैंने यों कहना शुरू किया—"मेरा जन्म अच्छे कुलमें हुआ है। मेरी जन्मभूमि इङ्गलेण्ड नामका एक टापू है जो यहांसे उतनीही दिनकी राहहै कि जितने दिनमें आपका सबसे जबरदस्त नौकर (घोड़ा) सूर्य्यके वार्षिक मार्गको ते कर सके। मैंने लड़काईसे जर्राही सीखी शरीरके फोड़े फुनसियां घाव वगैरहको आराम करनाही जर्राहोंका रोजगार है। मेरे देशका राज्य पाट एक औरत चलाती है। जिसको हम लोग रानी कहते हैं। रुपयेके